Kamal.Sandesh kamalsandesh.org KamalSandesh

कमल संदेश

वर्ष-20, अंक-03 01-15 फरवरी, 2025 (पाक्षिक) ₹20

'हमने संविधान की भावना के अनुरूप एससी, एसटी, ओबीसी, महिलाओं एवं गरीबों को सशक्त किया'

गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर भाजपा मुख्यालय (नई दिल्ली) में 26 जनवरी, 2025 को ध्वजारोहण करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा, साथ में भाजपा राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री बीएल संतोष भी उपस्थित रहे।

अहमदाबाद (गुजरात) में 19 जनवरी, 2025 को 'संविधान गौरव अभियान' में भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा का स्वागत करते मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल एवं गुजरात भाजपा के नेतागण

नई दिल्ली में 16 जनवरी, 2025 को 'भाजपा को जानें' पहल के तहत सिंगापुर के राष्ट्रपति महामहिम श्री थर्मन शनमुगरत्नम से मुलाकात करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा

नई दिल्ली में 19 जनवरी, 2025 को दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 के लिए 'भाजपा संकल्प पत्र' भाग–I को जारी करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा

शिरडी (महाराष्ट्र) में 12 जनवरी, 2025 को भाजपा महाराष्ट्र प्रदेश अधिवेशन के समापन सत्र में अभिवादन स्वीकार करते केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह

तीर्थराज प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) में 18 जनवरी, 2025 को महाकुंभ के दौरान संगम पर 'मां गंगा' की पूजा–अर्चना करते रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह

कमल संदेश

पाक्षिक पत्रिका

संपादक
डॉ. शिव शक्ति नाथ बक्सी

सह संपादक
संजीव कुमार सिन्हा
राम नयन सिंह

कला संपादक
विकास सैनी
भोला राय

डिजिटल मीडिया
राजीव कुमार
विपुल शर्मा

सदस्यता एवं वितरण
सतीश कुमार

इ-मेल
mail.kamalsandesh@gmail.com
mail@kamalsandesh.com
फोन: 011-23381428, फैक्स: 011-23387887
वेबसाइट: www.kamalsandesh.org

विषय-सूची

06 भाजपा ने संविधान को संरक्षित करने का कार्य किया: जगत प्रकाश नड्डा

संविधान गौरव अभियान' को संबोधित करते हुए श्री जगत प्रकाश नड्डा ने कहा कि आज गुजरात वह पवित्र भूमि है, जिसने भारत...

10 संविधान गौरव अभियान

'भारत रत्न' बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर: एक निष्ठावान राष्ट्रवादी..

13 राहुल गांधी का बयान भारत की एकता एवं अखंडता को कमजोर करने का खतरनाक षड्यंत्र : जगत प्रकाश नड्डा

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 15 जनवरी, 2025 को कांग्रेस नेता राहुल...

14 भाजपा संकल्प पत्र: विकसित दिल्ली की नींव

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 17 जनवरी, 2025 को दिल्ली प्रदेश भाजपा कार्यालय में दिल्ली विधानसभा...

30 'प्रवासी भारतीय दिवस' भारत और उसके प्रवासियों के बीच संबंधों को प्रगाढ़ करने वाली एक संस्था बन चुकी है: प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नौ जनवरी को ओडिशा के भुवनेश्वर में 18वें प्रवासी...

लेख

हमारे संगठन शिल्पी श्रद्धेय अटलजी / **अरुण सिंह** 18

दल में अनुशासन का वही स्थान है जो समाज में धर्म का है / **सुन्दर सिंह भंडारी** 24

पराक्रम दिवसः ओडिशा में नेताजी की विरासत का सम्मान / **धर्मेन्द्र प्रधान** 26

बेटी बचाओ—बेटी पढ़ाओ 'विकसित भारत' के लिए एक उत्कृष्ट पहल / **अन्नपूर्णा देवी** 28

अन्य

अग्रणी नौसैनिक लड़ाकू जहाज आईएनएस सूरत, आईएनएस नीलगिरि और आईएनएस वाघशीर राष्ट्र को समर्पित 16

अंतरिक्ष में दो उपग्रहों को जोड़ने वाला (डॉकिंग) चौथा देश बना भारत 17

टीबी के मामले 2015 के प्रति 1,00,000 जनसंख्या पर 237 से घटकर 2023 में 195 हो गए 20

वर्ष 2024 में रिकॉर्ड 24.5 गीगावाट सौर क्षमता और 3.4 गीगावाट पवन क्षमता जोड़ी गई 20

नये प्रदेश भाजपा अध्यक्षों की नियुक्ति 22

मोदी स्टोरी 22

कमल पुष्प 22

आज हमारी सरकार पूरी ईमानदारी से ग्राम स्वराज को जमीन पर उतारने का प्रयास कर रही है: नरेन्द्र मोदी 31

मन की बात 32

प्रकाशक एवं मुद्रक: डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास के लिए विष्णु मित्तल द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट नं.-8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)-201306 से मुद्रित एवं डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी.-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित। संपादक- डॉ. शिव शक्ति नाथ बक्सी

सोशल मीडिया से

नरेन्द्र मोदी

बीते एक दशक में हमारे कई प्रयासों से शहरों की तरह गांवों में भी सुविधाएं मिलने लगी हैं। इससे गांवों में जीवन आसान ही नहीं हो रहा, बल्कि लोगों का आर्थिक सामर्थ्य भी बढ़ रहा है।

(18 जनवरी, 2025)

जगत प्रकाश नड्डा

आज दिल्ली की हालत ये हैं कि सड़कों पर गंदे नाले का पानी बह रहा है, जगह-जगह कूड़े का ढेर लग गया है, दिल्ली की हवा प्रदूषित हो गई है, सड़कों का तो पता ही नहीं है कि सड़क में गड्ढा है या गड्ढे में सड़क है। 'आप-दा' सरकार ने दिल्ली का ऐसा हाल कर दिया है।

(23 जनवरी, 2025)

अमित शाह

अरविंद केजरीवाल की आप-दा सरकार ने दिल्ली की जनता से सिर्फ झूठे वादे कर उन्हें ठगने का काम किया और जनता के पैसों से अपना 'शीशमहल' बनवाया। अपने वादों को पूरा करना 'मोदी की गारंटी' है। दिल्ली में सरकार बनाकर भाजपा अपना एक-एक संकल्प पूरा करेगी।

(17 जनवरी, 2025)

राजनाथ सिंह

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में 'बेटी बचाओ—बेटी पढ़ाओ' पहल भारत में महिला सशक्तीकरण के लिए एक प्रमुख उत्प्रेरक बन गई है। महिलाओं की शिक्षा, सुरक्षा एवं स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करके यह पहल महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के लिए अनुकूल वातावरण बना रही है।

(21 जनवरी, 2025)

बी.एल. संतोष

तमिलनाडु भाजपा ने 33 जिला अध्यक्षों का चुनाव संपन्न किया। यह टीम अनुभव एवं नवीनता, वरिष्ठ लोगों एवं युवाओं, किसानों, मछुआरों और स्टार्टअप उद्यमियों का मिश्रण है। यह टीम 2026 में हमारा नेतृत्व करेगी। इस टीम को ढेर सारी शुभकामनाएं!

(19 जनवरी, 2025)

मनोहर लाल

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की अध्यक्षता में कैबिनेट ने 2025-26 सीजन के लिए कच्चे जूट के एमएसपी को बढ़ाकर 5,650 रुपए प्रति क्विंटल करने की स्वीकृति दी है। विगत एक दशक में केंद्र सरकार ने कच्चे जूट के एमएसपी में 2.35 गुना वृद्धि की है। यह निर्णय न केवल हमारे अन्नदाताओं को उनकी फसलों का उचित मूल्य प्रदान कर उनकी वित्तीय हालात को सुधारेगा, बल्कि जूट व्यवसाय से जुड़े लाखों परिवारों को भी लाभान्वित करेगा। (22 जनवरी, 2025)

संपादकीय

भाजपा संकल्प पत्र: दिल्ली के लिए एक नई आशा

दिल्ली विधानसभा चुनावों के दिन जैसे-जैसे नजदीक आ रहे हैं, लोग भारी संख्या में भाजपा का समर्थन करने अपने घरों से बाहर आ रहे हैं। इससे स्पष्ट है कि भाजपा की नीतियों एवं कार्यक्रमों में जन-जन का विश्वास दिनोंदिन और अधिक सुदृढ़ होता जा रहा है। भाजपा संकल्प पत्र से दिल्ली की जनता को आशा की एक नई किरण दिखी है। आम आदमी पार्टी (आप) के पिछले एक दशक के कुशासन से जनता त्रस्त है। आप सरकार जो भ्रष्टाचार, जनता के धन की लूट, प्रतिगामी नीतियों तथा जनविश्वास से खिलवाड़ की पर्याय बन चुकी है, उसके नेता अरविंद केजरीवाल ने अपने झूठे वादों, हर मोर्चे पर नाकामी तथा घटिया राजनीति से लोगों की पीठ में छूरा घोंपा है। जहां वे अपने कई मंत्रियों के साथ भ्रष्टाचार एवं घोटालों में फंसे हुए हैं, वहीं उन्होंने दिल्ली की जनता को मूल सुविधाओं से भी वंचित कर दिया है। उनके कुशासन से दिल्ली में हर वर्ग का जीवन दुष्कर हो गया है। आप सरकार के कारण पिछला पूरा दशक बर्बादी का दशक बनकर रह गया। विकास थम गया, अवसंरचनाएं जर्जर हो गईं तथा गरीब एवं मध्यम वर्ग के लिए जीवन चलाना तक कठिन हो गया, उनके लिए अवसर घटते गए। ऐसी विकट परिस्थिति में 'भाजपा संकल्प पत्र' दिल्ली के विकास की दिशा दिखा रही है तथा हर वर्ग के लिए राहत लेकर आई है। इसकी भविष्योन्मुखी दृष्टि से देश की राजधानी अवश्य ही विश्वस्तरीय सुविधाओं से सुसज्जित होगी।

> **आप सरकार के कारण पिछला पूरा दशक बर्बादी का दशक बनकर रह गया। विकास थम गया, अवसंरचनाएं जर्जर हो गईं तथा गरीब एवं मध्यम वर्ग के लिए जीवन चलाना तक कठिन हो गया, उनके लिए अवसर घटते गए**

कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा 'इंडियन स्टेट' पर हमला करते हुए दिए गए वक्तव्य की पूरे देश में घोर निंदा हुई है। इस वक्तव्य से न केवल कांग्रेस की अलोकतांत्रिक मानसिकता का पता चलता है, बल्कि वे संवैधानिक संस्थाएं जिनसे देश अपनी यात्रा के लिए ऊर्जा प्राप्त करता है, उनके विरुद्ध चल रहे भयावह षड्यंत्र का भी पर्दाफाश हुआ है। भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने ठीक ही कहा है कि राहुल गांधी के इस वक्तव्य से उनके इकोसिस्टम के अर्बन नक्सल तथा डीप स्टेट के नजदीकी संबंधों का पता चलता है जो भारत को बदनाम करना, नीचा दिखाना एवं इसकी विश्वसनीयता पर प्रश्न लगाना चाहते हैं। ध्यातव्य है कि राहुल गांधी एवं अन्य कांग्रेस नेता लगातार ऐसे वक्तव्य देने के आदी हो गए हैं, जिससे भारतीय हितों को नुकसान पहुंचता हो। यहां तक कि पाकिस्तान ने भी कई अवसरों पर इनके वक्तव्यों का सहारा लिया है। राहुल गांधी के इस वक्तव्य को उनके द्वारा दिए गए पूर्व के बयानों के संदर्भ में देखा जाना चाहिए, जिससे एक सोची-समझी पैटर्न को देखा जा सकता है। इसमें कोई शंका नहीं कि इस प्रकार के बयानों से उन तत्वों को बल मिलता है जो भारत के बढ़ते वैश्विक कद से असहज हो रहे हैं। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि कांग्रेस नेतृत्व के सत्ता-केंद्रित राजनीति के कारण, वह देश में विभाजनकारी एवं विकृत राजनीति का ग्रास बन गई है तथा अपने राजनैतिक स्वार्थों के आगे देखने में पूरी तरह से असमर्थ है। सत्ता की अंधी दौड़ में कांग्रेस न्यायपालिका, चुनाव आयोग एवं संसद जैसी गरिमापूर्ण संवैधानिक संस्थाओं पर भी आघात करने से नहीं हिचक रही। यहां तक कि संविधान की पवित्रता को भी इसने तार-तार किया है। कांग्रेस नेतृत्व की यह मानसिकता देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए एक बड़ा खतरा बनता जा रहा है।

कांग्रेस आज भारतीय राजनीति में अधिनायकवाद, वंशवाद एवं भ्रष्ट राजनीति का जीता-जागता प्रतीक है। यह न केवल लोकतंत्र विरोधी है, बल्कि पूर्व में देश पर तानाशाही भी लादने का विफल प्रयास कर चुकी है। जहां कई अवसरों पर इसने संविधान की धज्जियां तो उड़ाई ही, वहीं लगातार इसने 'भारत रत्न' बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर का अपमान किया। जहां कांग्रेस ने बाबा साहेब के देश के लिए किए गए योगदानों को सम्मानित करने से इनकार किया, वहीं प्रधानमंत्री श्री मोदी के दूरदर्शी एवं सुदृढ़ नेतृत्व में आज देश बाबा साहेब के बताए रास्ते पर चल रहा है। आज जब 'विकसित भारत' का मंत्र देश की आकांक्षाओं को नए पंख लगा रहा है, कांग्रेस अपने विभाजनकारी एजेंडे से भारत की उड़ान को बाधित करना चाहती है। विश्व आज उभरते भारत का जब स्वागत कर रहा है, 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' का सिद्धांत पूरे देश को 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एकजुट कर रहा है। ■

shivshaktibakshi@kamalsandesh.org

भाजपा ने संविधान को संरक्षित करने का कार्य किया: जगत प्रकाश नड्डा

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 19 जनवरी, 2025 को अहमदाबाद, गुजरात में आयोजित 'संविधान गौरव अभियान' को संबोधित करते हुए संविधान की 75 वर्षों की यात्रा पर प्रकाश डाला। श्री नड्डा ने कांग्रेस शासन के दौरान संविधान की मूल भावना से छेड़छाड़ करने और देश में आपातकाल लगाने की जमकर आलोचना की। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी की सरकार द्वारा किए गए संविधानसम्मत कार्यों को रेखांकित किया। ज्ञात हो कि भाजपा ने संविधान के महत्व एवं संविधान तथा लोकतंत्र को कमजोर करने की कांग्रेस की साजिशों से जनता को अवगत कराने के लिए संविधान गौरव अभियान शुरू किया है। इस अभियान के जरिए भाजपा कांग्रेस की पोल खोलेगी, क्योंकि संविधान और लोकतंत्र को जितनी चोट कांग्रेस ने पहुंचायी है, उतना किसी ने भी नहीं किया है। कार्यक्रम के दौरान मंच पर गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल, भाजपा के राष्ट्रीय संगठक श्री वी. सतीश, गुजरात के मंत्री श्री जगदीश विश्वकर्मा, महामंत्री श्री रजनीभाई पटेल, महापौर श्रीमती प्रतिभाबेन जैन, लोकसभा सांसद श्री दिनेशभाई मकवाना और अन्य नेता उपस्थित थे।

संविधान गौरव अभियान, अहमदाबाद (गुजरात)

'संविधान गौरव अभियान' को संबोधित करते हुए श्री जगत प्रकाश नड्डा ने कहा कि आज गुजरात वह पवित्र भूमि है, जिसने भारत के सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक आंदोलन में अपना योगदान दिया है। स्वामी दयानंद सरस्वती, सोमनाथ बनाने वाले 'किंग ऑफ सौराष्ट्र', भारत की आजादी में प्रमुख भूमिका में रहे महात्मा गांधी और लौहपुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल और आज दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जैसे नेतृत्व देकर गुजरात ने भारत के 'स्व' को जगाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 26 नवंबर, 1949 को संविधान सभा ने भारत के संविधान को स्वीकृति दी और संविधान 26 जनवरी, 1950 से लागू हुआ। लोकतंत्र के इन 75 वर्षों के इतिहास में कई उतार और चढ़ाव आए।

धारा 370 की समाप्ति

श्री नड्डा ने कहा कि 75 वर्षों में से 65 वर्ष कांग्रेस ने इस देश पर राज किया और संविधान के रखवालों के रूप में खड़े हुए। जब 1949 में संविधान को स्वीकृति दी जा रही थी तब संविधान रचयिता भीमराव अंबेडकरजी ने कहा था कि संविधान कितना भी बेहतर हो, लेकिन यदि उसको लागू करने वाले लोग बुरे हैं तो संविधान नाकामयाब हो जाएगा। उन्होंने कहा कि संविधान कितना भी बुरा हो, लेकिन यदि उसे लागू करने वाले अच्छे लोग हों तो वो कामयाब हो जाएगा। देश की आजादी के बाद लौहपुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल ने 2 वर्षों के भीतर 562 रियासतों को भारतीय संघ के अंतर्गत लाकर खड़ा कर दिया था, लेकिन जम्मू-कश्मीर को लेकर जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि उसे उन पर छोड़ दिया जाए। जम्मू और कश्मीर में ऐसी परिस्थितियां बनीं कि वहां धारा 370 को लागू कर दिया गया। जब फारुख अब्दुल्लाह के पिता शेख अब्दुल्लाह, जवाहरलाल नेहरू के साथ मिलकर धारा 370 रच रहे थे, तब तत्कालीन कानून मंत्री डॉ. भीमराव अंबेडकर ने कहा था कि यह लोग चाहते हैं कि भारत माता इन्हें भोजन दे, इनके लिए सड़कें बनाएं और यह भारत सरकार के समकक्ष खड़े हो जाएं, इसे मैं देशद्रोह मानता हूं। उन्होंने कहा कि यह देश के साथ धोखा होगा और मेरे कानून मंत्री रहते हुए धारा 370 लागू नहीं होगी। जवाहरलाल नेहरू ने उस कार्य को आगे बढ़ाया और धारा 370 के साथ 35-ए को भी जोड़ दिया, जो यह कहती थी कि जम्मू-कश्मीर का नागरिक भारत का नागरिक होगा, लेकिन भारत का नागरिक जम्मू और कश्मीर का नागरिक नहीं होगा। अलग प्रधान, अलग निशान और अलग संविधान; यह आर्टिकल 35-ए की ही देन था।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस और राहुल गांधी आज ससंद की मर्यादा की चिंता का ढोंग करते हैं, लेकिन इनकी पार्टी ने संसद को बिना बताए राष्ट्रपति से हस्ताक्षर कराके धारा 370 के साथ 35-ए को जोड़ दिया था। जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने कहा था कि एक देश में दो निशान, दो प्रधान और दो विधान नहीं चलेंगे। इसके लिए उन्हें गिरफ्तार किया गया और श्रीनगर जेल में संदेहास्पद स्थिति में उनकी मृत्यु हुई। उन्होंने इस देश की एकता के लिए अपना बलिदान दिया। श्यामा प्रसाद मुकर्जी की माताजी ने जब उनकी मृत्यु को लेकर जांच की मांग की, तो जवाहरलाल नेहरू ने वो जांच नहीं होने दी। जम्मू और कश्मीर को धारा 370 से यह मिला कि 2019 से पूर्व राज्य में एसटी सीट नहीं थी, गुज्जर, बकरवाल और आदिवासी भाइयों के लिए लोकसभा और विधानसभा में कोई सीट नहीं थी। भारत की संसद ने जिन 126 कानूनों को पास किया था, वो जम्मू और कश्मीर की धरती पर लागू नहीं होते थे। महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों के खिलाफ जो कानून थे वो जम्मू और कश्मीर में लागू नहीं थे। पॉस्को एक्ट जम्मू और कश्मीर में नहीं लागू था। जम्मू की बेटी अगर किसी अन्य राज्य के व्यक्ति से शादी कर ले, तो वो प्रॉपर्टी के राइट्स से वंचित हो जाती थी। वाल्मीकि समाज के वो लोग जो पंजाब से जम्मू और कश्मीर गए उनके बच्चे केवल सफाई कर्मचारी की नौकरी कर सकते थे। जब देश की जनता ने श्री नरेन्द्र मोदी को वोट देकर प्रधानमंत्री बनाया तो 6 अगस्त, 2019 को मोदीजी की इच्छाशक्ति ने धारा 370 को जड़ से समाप्त कर दिया। आज बाल्मीकि समाज के लोग जम्मू और कश्मीर के नागरिक हैं। आडवाणीजी उप-प्रधानमंत्री रहे, आई.के. गुजराल प्रधानमंत्री बने, डॉ. मनमोहन सिंह 10 वर्ष प्रधानमंत्री रहे और यह सब वेस्ट पाकिस्तान से आए थे, लेकिन जो लोग वेस्ट पाकिस्तान से आकर जम्मू और कश्मीर बस गए वो वहां प्रधान तक नहीं बन पाए, जम्मू कश्मीर की विधानसभा में विधायक तक नहीं बन सके।

12 जून, 1975 को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इंदिरा गांधी के खिलाफ फैसला सुनाया और उनके चुनाव को निरस्त कर दिया। कोर्ट ने कहा कि वह अगले छह साल तक चुनाव नहीं लड़ सकतीं, क्योंकि उन्होंने आचारसंहिता का उल्लंघन किया था। उस समय देश को कोई खतरा नहीं था और न ही किसी व्यक्ति पर कोई संकट था, लेकिन इंदिरा गांधी की कुर्सी जरूर खतरे में थी। अपनी सत्ता बचाने के लिए आंतरिक अशांति का माहौल बताकर 25 जून, 1975 को देश में आपातकाल लगा दिया था। आपातकाल में मौलिक अधिकारों को निलंबित कर दिया गया, अटल बिहारी वाजपेयीजी, लालकृष्ण आडवाणीजी, मोरारजी देसाईजी जैसे देश के वरिष्ठ नेताओं को जेल में डाल दिया गया

आपातकाल के दौरान ज्यादती

श्री नड्डा ने कहा कि 12 जून, 1975 को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इंदिरा गांधी के खिलाफ फैसला सुनाया और उनके चुनाव को निरस्त कर दिया। कोर्ट ने कहा कि वह अगले छह साल तक चुनाव नहीं लड़ सकतीं, क्योंकि उन्होंने आचारसंहिता का उल्लंघन किया था। उस समय देश को कोई खतरा नहीं था और न ही किसी व्यक्ति पर कोई संकट था, लेकिन इंदिरा गांधी की कुर्सी जरूर खतरे में थी। अपनी सत्ता बचाने के लिए आंतरिक अशांति का माहौल बताकर 25 जून, 1975 को देश में आपातकाल लगा दिया था। आपातकाल में मौलिक अधिकारों को निलंबित कर दिया गया, अटल बिहारी वाजपेयीजी, लालकृष्ण आडवाणीजी, मोरारजी देसाईजी जैसे देश के वरिष्ठ नेताओं को जेल में डाल दिया गया। आपातकाल के दौरान एमआईएसए (आंतरिक सुरक्षा कानून) और डीआईआर (भारत रक्षा नियम) के तहत 1,35,000 से अधिक लोगों को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया। यह गर्व की बात है कि सबसे ज्यादा लोग, जो आपातकाल के खिलाफ लड़ाई में जेल गए वो भाजपा की विचारधारा से जुड़े थे। उन्होंने पूरी ताकत के साथ स्वतंत्रता और आपातकाल के विरोध में संघर्ष किया। इंडियन एक्सप्रेस और द स्टेट्समैन जैसे प्रमुख अखबारों के संपादकीय को सेंसर कर दिया गया और पूरे देश में सेंसरशिप लागू कर दी गई। हजारों परिवार उजाड़ दिए गए, कई परिवारों के मुखिया जेल भेज दिए गए, लोगों ने दो साल तक जेल में यातना सही। कई परिवारों में पति-पत्नी दोनों को कैद कर लिया गया, जिससे उनके बच्चे अकेले रह गए। इंदिरा गांधी ने केवल अपनी कुर्सी बचाने के लिए ऐसी निर्दयता की। इंदिरा गांधी ने एक ऐसा कानून लागू किया, जिसके तहत पहली बार भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और लोकसभा अध्यक्ष को न्यायिक समीक्षा से छूट दे दी गई। इसका मतलब था कि उनके खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई नहीं हो सकती। अपनी सत्ता बचाने के लिए इन कानूनों को पहले से लागू मानकर यानी पिछली तारीख से अमल में लाया गया।

'धर्मनिरपेक्ष' और 'समाजवाद' शब्द को संविधान में केवल वोट हासिल करने के लिए जोड़ा

श्री नड्डा ने कहा कि इंदिरा गांधी ने 39वें और 42वें संविधान संशोधन अधिनियम पेश किए। 42वें संशोधन में सारी शक्तियां कार्यपालिका के हाथ में केंद्रित कर दी गईं और न्यायपालिका की भूमिका कम कर दी गई। इसका मतलब यह था कि संसद द्वारा बनाए गए कानून न्यायिक समीक्षा से बाहर हो जाएंगे, जो मूल संविधान को बदलने जैसा था, एक प्रकार से एक लघु संविधान था। इंदिरा गांधी में घमंड और अड़ियल रवैया आ गया था, उन्होंने यहां तक कह दिया था कि कोई भी संवैधानिक मामला उनके सामने नहीं लाया जा सकता और न्यायिक समीक्षा की अनुमति नहीं दी जाएगी। उन्होंने 'धर्मनिरपेक्ष' और 'समाजवाद' शब्द को संविधान में केवल वोट हासिल करने के लिए जोड़ा। इस मुद्दे पर डॉ. भीमराव अंबेडकर ने स्पष्ट रूप से कहा था कि भारत जैसे देश में 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हम हमेशा से सभी धर्मों को समान मानते आए हैं। डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द उन देशों द्वारा अपनाया जाना चाहिए, जिन्होंने अपने संविधान को एक इस्लामिक राज्य के रूप में प्रस्तुत किया। भारत तो हमेशा 'सर्वधर्म समभाव' के सिद्धांत पर चलने वाला देश रहा है। इसी कारण संविधान सभा की बहसों के दौरान डॉ. अंबेडकर ने 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द को संविधान में शामिल न करने की वकालत की थी। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने समाजवाद के बारे में कहा था कि भारत में सरकार के

स्वरूप का निर्णय सरकार द्वारा नहीं, बल्कि जनता द्वारा किया जाना चाहिए। जनता को अपनी इच्छा के अनुसार सरकार चुनने का अधिकार होना चाहिए और 'समाजवाद' जैसे शब्द को संविधान में शामिल नहीं किया जा सकता लेकिन इंदिरा गांधी ने जनता को लुभाने और झूठे नारों से गुमराह करने के प्रयास में 'धर्मनिरपेक्ष' और 'समाजवाद' दोनों शब्द संविधान में जोड़ दिए। आपातकाल के दौरान 'आंतरिक अशांति' को ऐसी स्थिति के रूप में परिभाषित किया गया था, जिसमें राष्ट्र के खिलाफ संगठित प्रयास हों, जिससे देश की स्थिरता को खतरा हो, और यह आपातकाल लागू करने का कारण बन सकता है। आज कांग्रेस नेता राहुल गांधी कह रहे हैं कि, 'उनकी भारतीय राज्य के खिलाफ लड़ाई है।' राहुल गांधी को न तो इतिहास का ज्ञान है और न ही किसी मुद्दे की गहरी समझ है।

समान नागरिक संहिता की ओर

श्री नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अनुच्छेद 370 और 35ए हटाए गए, जीएसटी लागू किया गया और 'एक राष्ट्र, एक कर' की अवधारणा स्थापित हुई। अब हम समान नागरिक संहिता को लागू करने की ओर बढ़ रहे हैं, जिसमें राज्यों द्वारा इसे लागू करने के प्रयास किए जा रहे हैं। मोदी सरकार के नेतृत्व में कई ऐतिहासिक कदम उठाए गए, जैसे ओबीसी समुदाय को संवैधानिक दर्जा देना और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (EWS) के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करना। मेडिकल परीक्षाओं में ओबीसी को 27 प्रतिशत और ईडब्ल्यूएस को 10 प्रतिशत आरक्षण दिया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर में वाल्मीकि समुदाय को आरक्षण का लाभ भी सुनिश्चित किया। पहली बार जम्मू-कश्मीर में लोगों ने जम्मू-कश्मीर संविधान की जगह भारतीय संविधान की शपथ ली। इसके अलावा, एससी और एसटी समुदाय के सदस्य विधान सभा तक पहुंचे। वहीं, तीन दशक से लंबित महिला आरक्षण विधेयक प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पारित हुआ, जिससे लोकसभा और विधान सभा में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण मिला।

सौ से अधिक बार राष्ट्रपति शासन लगाए गए

श्री नड्डा ने कहा कि शाहबानो मामले में जब सुप्रीम कोर्ट ने शाहबानो को भरण-पोषण देने का आदेश दिया, तो राजीव गांधी ने मुस्लिम नेताओं और मौलवियों के दबाव में कानून बदलकर शाहबानो को उनके हक के भरण-पोषण से वंचित कर दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने तीन तलाक के कानून को खत्म कर दिया और करोड़ों मुस्लिम महिलाओं को स्वतंत्र और सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार दिया। यह भारतीय संविधान का एक सकारात्मक और ऐतिहासिक परिणाम है। अब तक देश में 100 से अधिक बार राज्यों में राष्ट्रपति शासन लगाया गया है। इंदिरा गांधी ने इसे 50 बार लागू किया, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने इसे 8-9 बार लागू किया और राजीव गांधी ने भी कई बार राष्ट्रपति शासन लगाया, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सरकार बनने के बाद जम्मू-कश्मीर को छोड़कर किसी भी राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू नहीं किया गया। जम्मू-कश्मीर में भी राष्ट्रपति शासन चुनाव कराने के वादे के साथ लागू किया गया था और बाद में वहां चुनाव कराए भी गए।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अनुच्छेद 370 और 35ए हटाए गए, जीएसटी लागू किया गया और 'एक राष्ट्र, एक कर' की अवधारणा स्थापित हुई। अब हम समान नागरिक संहिता को लागू करने की ओर बढ़ रहे हैं, जिसमें राज्यों द्वारा इसे लागू करने के प्रयास किए जा रहे हैं। मोदी सरकार के नेतृत्व में कई ऐतिहासिक कदम उठाए गए, जैसे ओबीसी समुदाय को संवैधानिक दर्जा देना और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (EWS) के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करना

डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिष्ठा को समाज में ऊंचा किया

श्री नड्डा ने कहा कि विपक्ष अक्सर डॉ. भीमराव अंबेडकर की केवल प्रशंसा करता है, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने 14 अप्रैल को राष्ट्रीय समरसता दिवस घोषित किया। उनके जन्मस्थल महू में स्मारक बनाया गया, लंदन में शिक्षाभूमि स्थापित की गई, नागपुर में दीक्षाभूमि बनाई गई, दिल्ली में महापरिनिर्वाण भूमि और मुंबई में चैत्यभूमि का निर्माण किया गया। इन स्मारकों के जरिए प्रधानमंत्री जी ने डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिष्ठा को समाज में ऊंचा किया। कांग्रेस ने तो बाबासाहेब को 'भारत रत्न' देने से तक इंकार कर दिया था, लेकिन भाजपा समर्थित सरकार ने डॉ. भीमराव अंबेडकर को भारत रत्न से सम्मानित किया। कांग्रेस ने हरसंभव कोशिश की कि बाबासाहेब चुनाव न जीत सकें। उन्हें मुंबई से चुनाव नहीं लड़ने दिया गया, लेकिन वे कोलकाता से संविधान सभा के लिए चुने गए।

श्री नड्डा ने कहा कि 26 जनवरी, 2025 को भारत अपना 76वां गणतंत्र दिवस मनाएगा, लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि गौरव यात्रा के इन 75 वर्षों में कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने संविधान के साथ छेड़छाड़ की, उसकी मूल भावनाओं को नष्ट करने की कोशिश की और कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने इसे संरक्षित करने का कार्य किया। हमें यह भी पहचानना होगा कि किस सरकार ने बाबासाहेब के दृष्टिकोण को उजागर और सुरक्षित करने का कार्य किया। जैसे हम संविधान गौरव अभियान की शुरुआत करते हैं, हमें अपने इतिहास पर गर्व करना चाहिए और उन लोगों के प्रति सतर्क रहना चाहिए जिनके 'खाने के दांत और, दिखाने के और' हैं। ये लोग संविधान की किताब तो हाथ में रखते हैं, लेकिन कभी उसे पढ़ा नहीं। उनके पूर्वजों ने संविधान और देश के साथ क्या किया था, इसके बारे में ये कुछ भी नहीं जानते। ■

Samvidhan
Gaurav Abhiyaan

'भारत रत्न' बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर: एक निष्ठावान राष्ट्रवादी

- माननीय 'भारत रत्न' बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने अपना जीवन हाशिए पर पड़े समुदायों के कल्याण के लिए समर्पित किया।
- डॉ. भीमराव अंबेडकर की पारिवारिक पृष्ठभूमि ने इस उद्देश्य को आकार दिया, क्योंकि वह एक गरीब परिवार से आते थे और उनका जीवन बॉम्बे के एक इंप्रूवमेंट ट्रस्ट चॉल के गरीबों के बीच गुजरा था, जहां वह रहा करते थे।

"मैं यह मानने लगा हूं कि मेरे जीवन का उद्देश्य दलितों के कल्याण के लिए संघर्ष करना है।"

- रत्नागिरी जिला कृषक सम्मेलन, चिपलून में उनके संबोधन का अंश; 14 अप्रैल, 1929

डॉ. भीमराव अंबेडकर का एकजुट एवं मजबूत हिंदू धर्म का दृष्टिकोण

- भारत रत्न बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने हिंदुओं में एकता और ताकत पैदा करने के लिए जाति को खत्म करने की वकालत की।
- हिंदू धर्म के बारे में उनका दृष्टिकोण एक एकजुट एवं ताकतवर हिंदू धर्म से था, जो युद्ध के लिए तैयार है और अब्राहमिक धर्मों का मुकाबला करने के लिए तैयार है।

उन्होंने कहा, "जब तक जाति रहेगी, तब तक संगठन नहीं होगा और जब तक संगठन नहीं होगा, तब तक हिंदू कमजोर और दब्बू रहेगा"

- जाति का विनाश (1944), लेखक - भारत रत्न बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर

जाति को लेकर उनकी आलोचना ने हिंदू एकता को होने वाले नुकसान को रेखांकित किया

- यह सामाजिक विभाजनों को कम करने और एक एकजुट एवं मजबूत हिंदू पहचान को बढ़ावा देने वाले दृष्टिकोण के साथ मेल खाता है।
- यह इस संदर्भ में भी है कि यदि कोई यह समझना चाहे कि वह हिंदू राष्ट्रवादियों द्वारा किए गए सभी वास्तविक सुधार कार्यों की अत्यधिक सराहना क्यों करते थे।
- उन्होंने हिंदू महासभा के नेताओं वीर वी.डी. सावरकर और स्वामी श्रद्धानंद के कार्यों की खुलकर सराहना की है।

इस्लाम पर डॉ. भीमराव अंबेडकर

- डॉ. भीमराव अंबेडकर ने इस्लाम को एक अलगावकारी ताकत के रूप में देखा।
- उन्होंने स्पष्ट किया कि इस्लाम का भाईचारा 'केवल मुसलमानों के लिए' है, जो विश्वव्यापी भाईचारे को बढ़ावा देने के बजाय विभाजन पैदा करता है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने 'पाकिस्तान या भारत का विभाजन' में लिखा, "यह मुसलमानों और गैर-मुसलमानों के बीच जो भेद करता है, वह बहुत वास्तविक है... बहुत अलगावकारी भेद है।"

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने पर्दा प्रथा की निंदा की

- बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने अपनी पुस्तक 'पाकिस्तान या भारत का विभाजन' में पर्दा प्रथा की कड़ी आलोचना की, जिसमें बुर्का पहने महिलाओं को 'भारत में देखी जा सकने वाले सबसे भयावह दृश्य में से एक' बताया।
- उन्होंने उन प्रतिबंधात्मक सामाजिक प्रथाओं की निंदा की, जो मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों और गतिशीलता को सीमित करती हैं। उन्होंने कहा कि वह केवल कुछ पुरुष रिश्तेदारों से ही मिल सकती हैं एवं उन्हें मस्जिद में प्रार्थना करने से भी रोका जाता है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने सांप्रदायिक आधार पर आरक्षण का विरोध किया

- डॉ. भीमराव अंबेडकर ने सांप्रदायिक या समुदाय आधारित आरक्षण का विरोध किया जो कुछ समूहों को लाभ पहुंचाता था, उन्होंने चेतावनी दी कि इससे अवसर की समानता कम होगी।
- उन्होंने तर्क दिया कि ध्यान उन लोगों के उत्थान पर होना चाहिए जो ऐतिहासिक रूप से उत्पीड़ित रहे हैं, न कि मजहब के आधार पर अलग-अलग श्रेणियां बनायी जाए, जो सांप्रदायिक हितों पर एकीकृत राष्ट्रीय पहचान के लिए खतरा बन जाए।

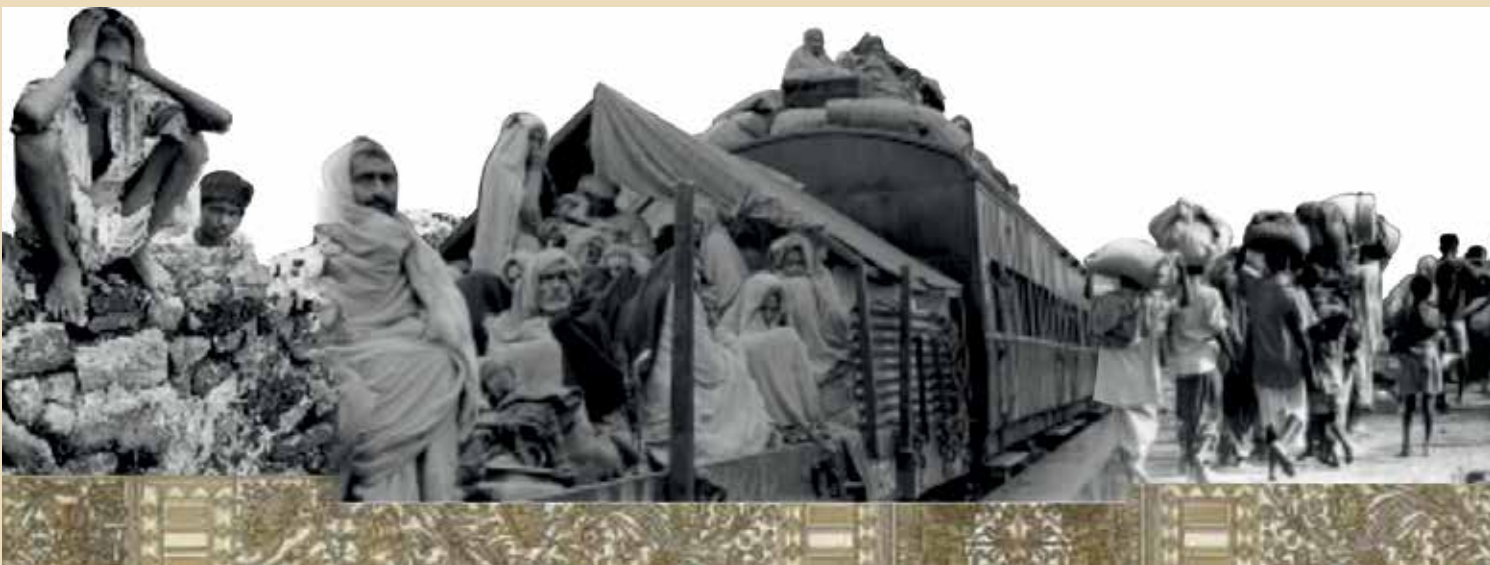

संविधान सभा को 30 नवंबर, 1948 को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा,

"मान लीजिए, उदाहरण के लिए किसी समुदाय या समुदायों के समूह के लिए आरक्षण किया गया... क्या कोई यह कह सकता है कि सामान्य प्रतिस्पर्धा के लिए 30 प्रतिशत का आरक्षण पहले सिद्धांत को प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से संतोषजनक होगा, अर्थात् अवसर की समानता होगी?"

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने कश्मीर को विशेष दर्जा दिए जाने का विरोध किया

- डॉ. भीमराव अंबेडकर ने कश्मीर के लिए विशेष दर्जे की मांग का कड़ा विरोध किया, क्योंकि यह राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के खिलाफ था।
- उन्हें लगा कि यह प्रावधान भारत के भीतर एक और संप्रभुता का निर्माण करेगा, जो देश की एकता के लिए विनाशकारी होगा।

जब वह डॉ. भीमराव अंबेडकर को जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने के लिए मनाने गए थे, तब शेख अब्दुल्ला से बातचीत के दौरान डॉ. अंबेडकर के शब्द थे,

"आप चाहते हैं कि भारत कश्मीर की रक्षा करे, उसके लोगों को भोजन दे और कश्मीरियों को पूरे भारत में समान अधिकार प्रदान करे, लेकिन आप भारत और भारतीयों को कश्मीर में सभी अधिकारों से वंचित करना चाहते हैं। भारत के कानून मंत्री के रूप में मैं राष्ट्रीय हितों के साथ इस तरह के विश्वासघात का हिस्सा नहीं हो सकता।"

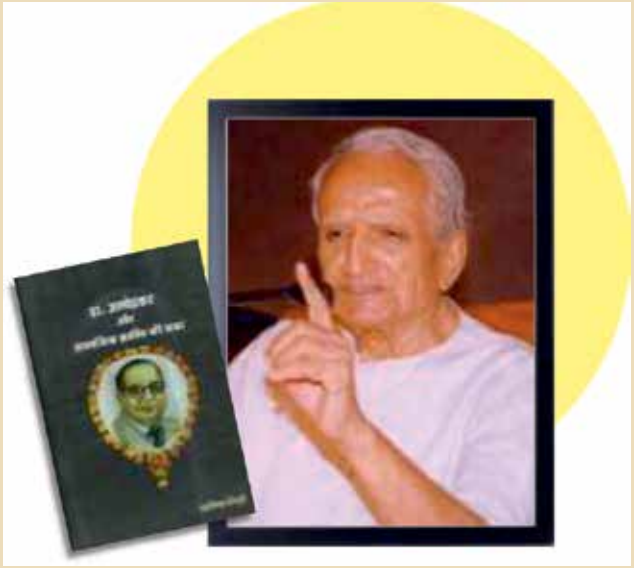

डॉ. भीमराव अंबेडकर का दत्तोपंत ठेंगड़ी पर प्रभाव

- आरएसएस के एक युवा प्रचारक श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी ने 1954 के उपचुनावों के दौरान डॉ. भीमराव अंबेडकर के पोलिंग एजेंट के रूप में काम किया।
- श्री ठेंगड़ी ने बाद में अपने अनुभवों को 'डॉ. भीमराव अंबेडकर और सामाजिक क्रांति की यात्रा' नामक पुस्तक के माध्यम से प्रस्तुत किया, जिसमें भारत के सामाजिक एवं राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में डॉ. अंबेडकर के विचारों के गहन प्रभाव के बारे में चर्चा की गयी है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर: समान नागरिक संहिता के प्रबल समर्थक

- संवैधानिक बहसों के दौरान डॉ. भीमराव अंबेडकर ने इस बात पर प्रकाश डाला कि विभिन्न व्यक्तिगत कानून होने से सामाजिक मतभेद पैदा हो सकते हैं और राष्ट्रीय एकीकरण में बाधा आ सकती है।
- डॉ. भीमराव अंबेडकर ने तर्क दिया कि मजहब पर आधारित व्यक्तिगत कानून अक्सर लैंगिक भेदभाव को बढ़ावा देते हैं।
- उन्होंने तर्क दिया कि समान नागरिक संहिता विभिन्न कानूनी प्रणालियों के प्रति परस्पर विरोधी निष्ठाओं को दूर करके नागरिकों के बीच एकता को बढ़ावा देगी। ■

राहुल गांधी का बयान भारत की एकता एवं अखंडता को कमजोर करने का खतरनाक षड्यंत्र : जगत प्रकाश नड्डा

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 15 जनवरी, 2025 को कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा नई दिल्ली में कांग्रेस पार्टी मुख्यालय के उद्घाटन के दौरान दिए गए राष्ट्र विरोधी बयान की कड़ी आलोचना की। श्री नड्डा ने कहा कि राहुल गांधी का बयान हमेशा देश को तोड़ने वालों और भारत को कमजोर करने वालों को समर्थन देने वाला होता है। राहुल गांधी का आज का बयान कि वह भारतीय राज्य (Indian State) से लड़ रहे हैं, यह कांग्रेस के भारत की एकता एवं अखंडता को कमजोर करने के खतरनाक षड्यंत्र को दर्शाती है।

श्री नड्डा ने सोशल मीडिया साइट 'एक्स' पर एक पोस्ट के माध्यम से राहुल गांधी की कड़ी निंदा की। श्री नड्डा ने कहा कि कांग्रेस पार्टी का इतिहास ऐसी ताकतों का समर्थन करने का रहा है, जिनका उद्देश्य भारत को कमजोर करना है। कांग्रेस की सत्ता की लालसा ने देश की राष्ट्रीय अखंडता और लोगों के विश्वास को नुकसान पहुंचाया है। हालांकि, भारत के नागरिक समझदार हैं और उन्होंने राहुल गांधी और उनकी इस पुरानी विचारधारा को अस्वीकार करने का संकल्प लिया है। कांग्रेस की सच्चाई अब किसी से छुपी हुई नहीं है, क्योंकि उनके अपने नेता राहुल गांधी ने ही कांग्रेस की सच्चाई को उजागर कर दिया है।

श्री नड्डा ने राहुल गांधी पर तंज कसते हुए कहा कि मैं राहुल गांधी की सराहना करता हूं कि आज उन्होंने वह बात स्पष्ट रूप से साफ़-साफ कह दी है जो पूरा देश जानता है कि राहुल गांधी भारत से लड़ रहे है। कांग्रेस की घिनौनी सच्चाई अब उनके अपने नेता द्वारा ही उजागर कर दी गई है। यह कोई रहस्य नहीं है कि राहुल गांधी और उनके पारिस्थितिकी तंत्र के अर्बन नक्सल और डीप स्टेट के साथ घनिष्ठ संबंध हैं, जो भारत को बदनाम और अपमानित करना चाहते हैं। राहुल गांधी ने कई बार ऐसे राष्ट्र विरोधी बयान दिए हैं और गतिविधियों में शामिल रहे हैं। राहुल गांधी ने जो कुछ भी कहा है, वह भारत को तोड़ने और हमारे समाज को विभाजित करने की दिशा में उठाया गया कांग्रेस का एक और कदम है।

श्री नड्डा ने कहा कि राहुल गांधी ने स्पष्ट कर दिया है कि वे भारत से लड़ रहे हैं। ये लोग भारत को और कमजोर करना चाहते हैं।

प्रमुख बिंदु

- राहुल गांधी ने स्पष्ट कर दिया है कि वे भारत से लड़ रहे हैं। ये लोग भारत को और कमजोर करना चाहते हैं।
- मैं राहुल गांधी की सराहना करता हूं कि आज उन्होंने वह बात स्पष्ट रूप से साफ़-साफ कह दी है, जो पूरा देश जानता है कि राहुल गांधी भारत से लड़ रहे है।
- यह कोई रहस्य नहीं है कि राहुल गांधी और उनके पारिस्थितिकी तंत्र के अर्बन नक्सल और डीप स्टेट के साथ घनिष्ठ संबंध हैं, जो भारत को बदनाम और अपमानित करना चाहते हैं।
- राहुल गांधी ने कई बार ऐसे राष्ट्र विरोधी बयान दिए हैं और गतिविधियों में शामिल रहे हैं। कांग्रेस पार्टी का इतिहास ऐसी ताकतों का समर्थन करने का रहा है, जिनका उद्देश्य भारत को कमजोर करना है।
- कांग्रेस की सत्ता की लालसा ने देश की राष्ट्रीय अखंडता और लोगों के विश्वास को नुकसान पहुंचाया है। देश की जनता समझदार है और उन्होंने राहुल गांधी और कांग्रेस की विचारधारा को नकारने का संकल्प लिया है।

भाजपा संकल्प पत्रः विकसित दिल्ल

भाजपा संकल्प पत्र : भाग-I

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 17 जनवरी, 2025 को दिल्ली प्रदेश भाजपा कार्यालय में दिल्ली विधानसभा चुनाव हेतु पार्टी के संकल्प पत्र भाग-I को जारी किया और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में दिल्ली के विकास के लिए किए गए कार्यों को विस्तार से रेखांकित करते हुए दिल्ली के विकास की दृष्टि से भाजपा के विजन को मीडिया एवं दिल्ली की जनता के सामने रखा। उन्होंने दिल्ली की जनता से अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी द्वारा किए गए झूठे वादों एवं धोखे को लेकर अरविंद केजरीवाल पर करारा प्रहार किया। कार्यक्रम में दिल्ली प्रदेश भाजपा प्रभारी एवं पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बैजयंत जय पांडा, दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री वीरेंद्र सचदेवा, चुनाव सह-प्रभारी श्री अतुल गर्ग, सह-प्रभारी श्रीमती अलका गुर्जर, दिल्ली के सभी सांसद एवं पार्टी के सभी वरिष्ठ प्रदेश पदाधिकारी उपस्थित थे।

श्री नड्डा ने कहा कि दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा का यह संकल्प पत्र विकसित दिल्ली की नींव रखेगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश की राजनीतिक संस्कृति को बदलकर रख दिया है।

महिला सशक्तीकरण

दिल्ली में भाजपा सरकार बनने पर महिला समृद्धि योजना के तहत 2500 रुपये प्रतिमाह महिलाओं को दिया जाएगा और पहली ही कैबिनेट मीटिंग में इसे पारित किया जाएगा। भाजपा ने दिल्ली की महिलाओं को 2500 रुपये प्रति माह देने का संकल्प लिया है। गरीब बहनों को सिलेंडर पर 500 रुपये की सब्सिडी दी जाएगी और दिवाली व होली पर एक सिलेंडर निःशुल्क दिया जाएगा। इसी तरह से मातृत्व वंदना योजना को और शक्ति देने के लिए 6 न्यूट्रीशनल किट और 21 हजार रुपये प्रति गर्भवती महिला को मुख्यमंत्री की ओर से दिया जाएगा। विधवाओं एवं बेसहारा महिलाओं की पेंशन को भी 2,500 से बढ़ाकर 3,000 रुपये कर दिया जाएगा।

स्वास्थ्य

दिल्ली में भाजपा की सरकार बनने के बाद पहली ही कैबिनेट में आयुष्मान भारत योजना को लागू किया जाएगा। इसके साथ ही दिल्ली सरकार की ओर से भी 5 लाख रुपये का अतिरिक्त स्वास्थ्य कवर दिया जाएगा, यानी कुल 10 लाख रुपये का स्वास्थ्य कवर मिलेगा।

गरीब कल्याण

दिल्ली में 60 से 70 वर्ष के बुजुर्गों को उनकी वृद्धा पेंशन 2 हजार से बढ़ाकर 2500 रुपये प्रति माह की जाएगी। इसके अतिरिक्त 70 वर्ष से अधिक के वरिष्ठ नागरिकों, विधवाओं और बेसहारा महिलाओं की पेंशन 2,500 से बढ़ाकर 3,000 रुपये कर दिया जाएगा। दिल्ली की सभी झुग्गी बस्तियों में 5 रुपये में पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने के लिए अटल कैंटीन योजना को शुरू किया जाएगा।

भाजपा संकल्प पत्र : भाग-II

भाजपा के वरिष्ठ नेता, लोकसभा सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री अनुराग ठाकुर ने 21 जनवरी, 2025 को दिल्ली प्रदेश भाजपा कार्यालय में दिल्ली विधानसभा चुनाव हेतु पार्टी के संकल्प पत्र भाग-II को जारी किया। कार्यक्रम में दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री वीरेंद्र सचदेवा, चुनाव सह-प्रभारी श्रीमती अलका गुर्जर, सांसद श्री मनोज तिवारी सहित दिल्ली के सांसद उपस्थित रहे।

एसआईटी गठित कर कुशासन और भ्रष्टाचार की जांच

भाजपा की सरकार आने के बाद आम आदमी पार्टी सरकार के कुशासन और भ्रष्टाचार के खिलाफ एसआईटी गठित कर जांच कराएगी।

युवा सशक्तीकरण

भाजपा की सरकार बनने के बाद दिल्ली के सरकारी शिक्षण संस्थानों में जरूरतमंद छात्रों को केजी से लेकर पीजी तक मुफ़्त शिक्षा प्रदान की जाएगी। भाजपा दिल्ली के युवाओं को राज्य की विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सक्षम बनाने के लिए एक मुश्त 15 हजार रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान करेगी, जिससे कि युवा विभिन्न परीक्षाओं के लिए अच्छी तरह से तैयारी कर सके और उनके अभिभावकों पर बोझ न बढ़े। भाजपा सरकार द्वारा युवाओं को परीक्षा केंद्र तक यात्रा की लागत और 2 बार परीक्षाओं के आवेदन शुल्क की प्रतिपूर्ति भी की जाएगी।

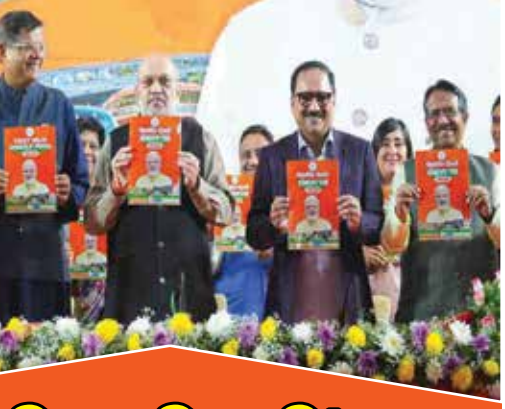

ली की नींव

अनुसूचित जाति का सशक्तीकरण

भाजपा दिल्ली में व्यवसायी और तकनीकी पाठ्यक्रमों के छात्रों के लिए डॉ. भीमराव अंबेडकर स्टाइपेन्ड योजना की शुरुआत करेगी, जिसके अंतर्गत आईटीआई और स्किल सेंटर पॉलिटेक्निक के एससी छात्रों को 1 हजार रुपये का प्रतिमाह स्टाइपेन्ड प्रदान किया जाएगा।

ऑटो-टैक्सी ड्राइवरों को लाभ

दिल्ली में ऑटो-टैक्सी ड्राइवरों के लिए वेलफेयर बोर्ड की स्थापना की जाएगी और इसके गठन के बाद 10 लाख रुपये तक का जीवन बीमा और 5 लाख रुपये तक का दुर्घटना बीमा उपलब्ध करवाया जाएगा। मोदी सरकार ने पीएम सुरक्षा योजना और जीवन ज्योति योजना का लाभ समूचे देश को प्रदान किया है। अब दिल्ली वालों को भी इसका लाभ मिलेगा। दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी सरकार आने के बाद ऑटो-टैक्सी ड्राइवरों के उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों को स्कॉलरशिप भी प्रदान करेगी और ऑटो-टैक्सी ड्राइवरों के वाहनों के बीमे पर भी रियायत भी दी जाएगी।

असंगठित क्षेत्रों के कामगारों को मान्यता

दिल्ली की भाजपा सरकार ऐसी होगी जो असंगठित क्षेत्रों में कार्य करने वाले घरेलू कामगारों को मान्यता देगी, उनके लिए कल्याणकारी योजनाएं चलाई जाएंगी और डोमेस्टिक वर्कर वेल्फेयर बोर्ड का गठन किया जाएगा। घरों में काम करने वाले लोगों को 10 लाख रुपए का जीवन बीमा दिया जाएगा, 5 लाख रुपए तक का दुर्घटना बीमा दिया जाएगा, उनके बच्चों को उच्च शिक्षा देने के लिए स्कॉलरशिप भी दी जाएगी। मातृत्व लाभ के लिए भाजपा सरकार 6 महीने की पेड मैटरनिटी लीव देने का काम किया जाएगा।

भाजपा संकल्प पत्र : भाग-III

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने 25 जनवरी, 2025 को दिल्ली प्रदेश भाजपा कार्यालय में दिल्ली विधानसभा हेतु भारतीय जनता पार्टी का संकल्प पत्र भाग-III जारी किया। इस अवसर पर दिल्ली भाजपा प्रभारी श्री बैजयंत जय पांडा, भाजपा दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र सचदेवा, केंद्रीय मंत्री श्री हर्ष मल्होत्रा, सांसद श्री मनोज तिवारी, श्री प्रवीण खंडेलवाल, सुश्री बांसुरी स्वराज, पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री हर्षवर्धन सहित पार्टी के अन्य नेता व पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

अनधिकृत कॉलोनियों और शरणार्थी कॉलोनियों को मालिकाना हक मिलेगा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 1700 से अधिक अनधिकृत कॉलोनियों को मालिकाना हक देने की घोषणा की है, लेकिन इसमें किसी को निर्माण एवं खरीद-फरोख्त की अनुमति नहीं थी। लेकिन अब इन लोगों को संपूर्ण मालिकाना हक देकर आवास एवं शहरी विकास मंत्रालय और दिल्ली के नियमों के अनुसार निर्माण करने एवं बेचने का अधिकार दिया जाएगा। दिल्ली में 13 हजार दुकानें सील हैं, भाजपा ने अधिवक्ताओं के साथ बैठक कर इन्हें खोलने के न्यायिक विकल्प ढूंढने की पहल की है। भाजपा सरकार बनने के 6 महीने के अंदर इन सभी दुकानों के न्यायिक प्रक्रिया के तहत फिर से खुलवाएगी। विभाजन के समय से बसाई गई शरणार्थी कॉलोनियों जैसे राजेन्द्र नगर और लाजपत नगर की लीज बढ़ाई जाती है, जिस कारण से न उस संपत्ति को विरासत में दिया जा सकता है और न ही खरीदा-बेचा जा सकता है। भाजपा पाकिस्तान से आए शरणार्थियों को पहली ही कैबिनेट बैठक में मालिकाना हक देगी। एलएंडडीओ के स्वामित्व वाले बाजार को फ्री होल्ड किया जाएगा और इसका चरण बद्ध क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाएगा।

गिग, टैक्सटाइल वर्कर एवं श्रमिक सशक्तीकरण

भाजपा की सरकार बनने पर गिग वर्कर्स के लिए गिग वर्कर्स वेलफेयर बोर्ड का गठन किया जाएगा, जो सभी गिग वर्कर्स को 10 लाख रुपए तक का जीवन बीमा और 5 लाख रुपए तक दुर्घटना बीमा प्रदान किया जाएगा। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले गिग वर्कर्स के बच्चों को छात्रवृत्ति एवं वाहन बीमा भी प्रदान किया जाएगा। इसी तरह टैक्सटाइल वर्कर्स को 10 लाख रुपए तक का जीवन बीमा एवं 5 लाख रुपए तक दुर्घटना बीमा, बच्चों को छात्रवृत्ति एवं वाहन बीमा दिया जाएगा। भाजपा श्रमिकों को कौशल उन्नयन टूलकिट के लिए 10 हजार रुपए की वित्तीय सहायता एवं पंजीकृत श्रमिकों को 3 लाख रुपए तक ऋण मुहैया कराएगी। श्रमिकों को 5 लाख रुपए तक दुर्घटना बीमा दिया जाएगा।

युवाओं को रोजगार, परिवहन एवं पर्यटन का विकास

भाजपा की सरकार बनने पर दिल्ली के युवाओं को पारदर्शी तरीके से 50 हजार नौकरियां दी जाएंगी एवं 20 लाख स्वरोजगार के अवसर सृजित किए जाएंगे। भाजपा 20 हजार करोड़ रुपए के निवेश के माध्यम से इंटीग्रेटेड पब्लिक ट्रांसपोर्ट नेटवर्क बनाएगी एवं 13000 हजार बसों को ई-बस में परिवर्तित कर दिल्ली को 100 प्रतिशत ई-बस सिटी बनाएगी। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए उत्तर प्रदेश और हरियाणा सरकार के सहयोग के साथ महाभारत कॉरिडोर बनाया जाएगा एवं साबरमती रिवर फ्रंट की तर्ज पर यमुना रिवर फ्रंट का विकास किया जाएगा। भाजपा मैनुअल स्कैवेंजिंग को 100 प्रतिशत तक समाप्त कर मानवीय दुर्व्यवहार को खत्म करेगी। ■

अग्रणी नौसैनिक लड़ाकू जहाज आईएनएस सूरत, आईएनएस नीलगिरि और आईएनएस वाघशीर राष्ट्र को समर्पित

इन लड़ाकू जहाजों का जलावतरण रक्षा विनिर्माण और समुद्री सुरक्षा में वैश्विक नेता बनने के भारत के सपने को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण छलांग है

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 15 जनवरी को मुंबई के नौसेना डॉकयार्ड में नौसेना के तीन अग्रणी लड़ाकू जहाजों आईएनएस सूरत, आईएनएस नीलगिरी और आईएनएस वाघशीर को राष्ट्र को समर्पित किया। इन लड़ाकू जहाजों का जलावतरण रक्षा विनिर्माण और समुद्री सुरक्षा में वैश्विक नेता बनने के भारत के सपने को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण छलांग है। पी15बी गाइडेड मिसाइल विध्वंसक परियोजना का चौथा और अंतिम जहाज आईएनएस सूरत दुनिया के सबसे बड़े और सबसे आधुनिक विध्वंसक जहाजों में से एक है तथा इसमें 75 प्रतिशत स्वदेशी सामग्री है व यह अत्याधुनिक हथियार-सेंसर पैकेज और उन्नत नेटवर्क-केंद्रित क्षमताओं से लैस है।

पी17ए स्टील्थ फ्रिगेट परियोजना का पहला जहाज आईएनएस नीलगिरि, भारतीय नौसेना के युद्धपोत डिजाइन ब्यूरो द्वारा डिजाइन किया गया है और इसमें उन्नत उत्तरजीविता, समुद्री क्षमता और गुप्त रहने की क्षमता के लिए उन्नत विशेषताएं शामिल हैं। वहीं, आईएनएस वाघशीर, पनडुब्बी निर्माण में भारत की बढ़ती विशेषज्ञता का प्रतिनिधित्व करती है और इसका निर्माण फ्रांस के नौसेना समूह के सहयोग से किया गया है।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 21वीं सदी में भारत की सैन्य क्षमताओं को बढ़ाने और आधुनिक बनाने के महत्व पर जोर देते हुए कहा, "चाहे वह जमीन हो, पानी हो, हवा हो, गहरा समुद्र हो या अनंत अंतरिक्ष, भारत हर जगह अपने हितों की रक्षा कर रहा है।" उन्होंने चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ की स्थापना सहित किए जा रहे अन्य निरंतर सुधारों पर टिप्पणी की। श्री मोदी ने कहा कि भारत सशस्त्र बलों को और अधिक कुशल बनाने के लिए थिएटर कमांड के कार्यान्वयन की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

पिछले एक दशक में भारत के सशस्त्र बलों द्वारा आत्मनिर्भरता को अपनाने की सराहना करते हुए प्रधानमंत्री ने संकट के समय अन्य देशों पर निर्भरता कम करने के सराहनीय प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि सशस्त्र बलों ने 5,000 से अधिक वस्तुओं और उपकरणों की पहचान की है, जिनका अब आयात नहीं किया जाएगा।

श्री मोदी ने पिछले एक दशक में नौसेना में 33 जहाजों और सात पनडुब्बियों को शामिल करने का उल्लेख किया, जिसमें 40 में से 39 नौसैनिक जहाजों का निर्माण भारतीय शिपयार्ड में किया गया। इसमें शानदार आईएनएस विक्रांत विमानवाहक पोत और आईएनएस अरिहंत तथा आईएनएस अरिघात जैसी परमाणु पनडुब्बियां शामिल हैं। प्रधानमंत्री ने 'मेक इन इंडिया' अभियान को आगे बढ़ाने के लिए सशस्त्र बलों को बधाई दी। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत का रक्षा उत्पादन 1.25 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गया है और देश 100 से अधिक देशों को रक्षा उपकरण निर्यात कर रहा है। ■

वित्त वर्ष 2024-25 के 10 महीनों के भीतर जीईएम के माध्यम से खरीद चार लाख करोड़ रुपये के पार हुई

गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (जीईएम) ने चालू वित्त वर्ष 2024-25 के 10 महीनों के भीतर पिछले वर्ष के सकल व्यापारिक मूल्य (जीएमवी) 4 लाख करोड़ रुपये को पार कर लिया है। 23 जनवरी, 2025 तक गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस ने 4.09 लाख करोड़ रुपये का जीएमवी दर्ज किया है, जो पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि की तुलना में लगभग 50% की वृद्धि दर्शाता है।

खंडवार जीएमवी के संदर्भ में सेवा खंड का योगदान 2.54 लाख करोड़ रुपये (कुल जीएमवी का 62%) रहा है, जबकि उत्पाद खंड का योगदान 1.55 लाख करोड़ रुपये (कुल जीएमवी का 38%) रहा है।

वित्त वर्ष 2024-25 में गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस पर सेवा खंड की तीव्र वृद्धि ने पोर्टल की उपयोगिता को काफी बढ़ावा दिया है। गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस पर सेवाओं की पेशकश के विस्तार पर जोर देते हुए वित्त वर्ष 2024-25 में पोर्टल पर 19 नई सेवा श्रेणियां शुरू की गई हैं। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि सेवा क्षेत्र में पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि की तुलना में लगभग 100% की बढ़ोतरी हुई है। इस प्लेटफॉर्म ने डेबिट कार्डों की छपाई, बल्क ईमेल सेवाएं, डार्क फाइबर लीजिंग, डेटा केंद्रों के परिचालन प्रबंधन आदि जैसी विशेष सेवाओं की खरीद की सुविधा प्रदान करके सरकारी संस्थाओं को विश्वसनीय विक्रेताओं से स्रोत प्राप्त करने में सक्षम बनाया है, जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण दक्षता भी बढ़ी है।

गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस पोर्टल ने अपनी स्थापना के बाद से निरंतर सरलीकरण और सुधारों के जरिये 11.64 लाख करोड़ रुपये से अधिक के जीएमवी के साथ 2.59 करोड़ से ज्यादा के ऑर्डर सफलतापूर्वक पूरे किए हैं। चालू वित्त वर्ष के दौरान गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस पोर्टल ने एक ही दिन में 49,960 ऑर्डरों की प्रक्रिया पूरी करके एक और ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की, जो गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस पोर्टल इकोसिस्टम की निर्बाध दक्षता एवं मजबूती तथा सभी हितधारकों द्वारा इसके तेजी से अपनाने का उदाहरण है। ■

अंतरिक्ष में दो उपग्रहों को जोड़ने वाला (डॉकिंग) चौथा देश बना भारत

डॉकिंग अभियान (स्पैडेक्स) मिशन भारत की अंतरिक्ष क्षमताओं में एक महत्वपूर्ण छलांग है। यह भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन 'इसरो' को भविष्य में अधिक जटिल और महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष अभियानों के लिए सक्षमता प्रदान करेगा

भारत ने ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक डॉकिंग अभियान (स्पैडेक्स) मिशन 16 जनवरी, 2025 को पूरा कर लिया। इसके साथ ही वह अंतरिक्ष में दो उपग्रहों को साथ जोड़ने की डॉकिंग प्रक्रिया अंजाम देने में सक्षम देशों के विशिष्ट समूह में शामिल हो गया। इस सफलता के साथ भारत यह तकनीकी उपलब्धि हासिल करने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया है। इसरो ने 30 दिसंबर, 2024 को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी)-सी60 द्वारा (स्पेस डॉकिंग एक्सपेरीमेंट) स्पैडेक्स अंतरिक्ष यान के सफल प्रक्षेपण के साथ मिशन की शुरुआत की थी।

इस अभूतपूर्व मिशन का उद्देश्य अंतरिक्ष यानों या उपग्रहों को आपस में जोड़ने (डॉकिंग) और उन्हें अलग करने (अनडॉकिंग) में भारत की तकनीकी शक्ति प्रदर्शित करना था जो उपग्रह सेवा, अंतरिक्ष स्टेशन संचालन और अंतरग्रहीय अन्वेषण जैसी महत्वपूर्ण क्षमता है।

दरअसल, स्पैडेक्स मिशन भारत की अंतरिक्ष क्षमताओं में एक महत्वपूर्ण छलांग है। यह भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन 'इसरो' को भविष्य में अधिक जटिल और महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष अभियानों के लिए सक्षमता प्रदान करेगा।

प्रधानमंत्री ने उपग्रहों की अंतरिक्ष डॉकिंग के सफल प्रदर्शन के लिए इसरो को बधाई दी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने उपग्रहों की अंतरिक्ष डॉकिंग के सफल प्रदर्शन के लिए इसरो और पूरे अंतरिक्ष समुदाय को बधाई दी। श्री मोदी ने कहा कि यह आने वाले वर्षों में भारत के महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष मिशनों के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

प्रधानमंत्री ने एक्स पर पोस्ट किया, "उपग्रहों की अंतरिक्ष डॉकिंग के सफल प्रदर्शन के लिए इसरो के हमारे वैज्ञानिकों और पूरे अंतरिक्ष समुदाय को बधाई। यह आने वाले वर्षों में भारत के महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष मिशनों के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।" ■

कैबिनेट ने 'तीसरे लॉन्च पैड' की स्थापना को दी मंजूरी

यह परियोजना उच्च प्रक्षेपण आवृत्तियों को सक्षम करके तथा मानव अंतरिक्ष उड़ान और अंतरिक्ष खोज अभियानों को शुरू करने की राष्ट्रीय क्षमता को सक्षम करके भारतीय अंतरिक्ष इकोसिस्टम को बढ़ावा देगी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 16 जनवरी को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित इसरो के सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र में तीसरे लॉन्च पैड (टीएलपी) को मंजूरी दे दी।

तीसरी लॉन्च पैड परियोजना में इसरो के अगली पीढ़ी के लॉन्च रॉकेट के लिए आंध्र प्रदेश में श्रीहरिकोटा लॉन्च इंफ्रास्ट्रक्चर की स्थापना और साथ ही श्रीहरिकोटा में दूसरे लॉन्च पैड के लिए स्टैंडबाय लॉन्च पैड के रूप में सहायता प्रदान करना शामिल है। इससे भविष्य में चलाये जाने वाले भारतीय मानव अंतरिक्ष उड़ान अभियानों के लिए लॉन्च क्षमता में भी वृद्धि होगी। यह परियोजना राष्ट्रीय महत्व की है।

तीसरे लॉन्च पैड को इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि यह यथासंभव न सिर्फ हमारे लिए बल्कि पूरे विश्व के लिए अनुकूल हो, साथ ही न केवल एनजीएलवी को, बल्कि सेमीक्रायोजेनिक स्टेज के साथ एलवीएम3 रॉकेट के साथ-साथ एनजीएलवी के स्केल अप कॉन्फ़िगरेशन को भी सपोर्ट कर सके। इसको तैयार करने का काम अधिकतम उद्योग भागीदारी के साथ पूरा किया जाएगा। इसरो द्वारा पहले लॉन्च पैड स्थापित करने के अनुभव का पूरा लाभ उठाया जाएगा और मौजूदा लॉन्च परिसर सुविधाओं को अधिकतम साझा किया जाएगा।

टीएलपी को 48 महीने या 4 वर्ष की अवधि के भीतर स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए कुल 3984.86 करोड़ रुपये धनराशि की आवश्यकता है और इसमें लॉन्च पैड और सम्बंधित सुविधाओं की स्थापना भी शामिल है।

यह परियोजना उच्च प्रक्षेपण आवृत्तियों को सक्षम करके तथा मानव अंतरिक्ष उड़ान और अंतरिक्ष खोज अभियानों को शुरू करने की राष्ट्रीय क्षमता को सक्षम करके भारतीय अंतरिक्ष इकोसिस्टम को बढ़ावा देगी।

उल्लेखनीय है कि अमृत काल के दौरान भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के विस्तारित दृष्टिकोण में वर्ष 2035 तक भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (बीएएस) और वर्ष 2040 तक भारतीय चालक दल के साथ चंद्रमा पर पहुंचना शामिल है। इसके लिए नई प्रणालियों के साथ नई पीढ़ी के भारी प्रक्षेपण रॉकेटों की आवश्यकता है, जो मौजूदा लॉन्च पैड से संभव नहीं है। अगले 25-30 वर्षों के लिए विकसित हो रही अंतरिक्ष परिवहन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अगली पीढ़ी के राकेटों के भारी वर्ग की लॉन्च आवश्यकताओं को पूरा करने और एसएलपी के लिए स्टैंड बाई के रूप में तीसरे लॉन्च पैड की शीघ्र स्थापना अत्यंत आवश्यक है। ■

हमारे संगठन शिल्पी श्रद्धेय अटलजी

अरुण सिंह

भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी स्वतंत्र भारत के सबसे जनप्रिय और सम्मानित राजनेताओं में से एक हैं। व्यक्तित्व, वक्तृत्व व कृतित्व से मिलकर बने उनके नेतृत्व ने भारतीय जनता पार्टी को एक सशक्त राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी जीवन यात्रा एक अद्वितीय प्रतिभा, राजनीतिक कुशलता और दूरदर्शी नेतृत्व से परिपूर्ण थी और उन्होंने भाजपा को एक नवोदित संगठन से भारतीय राजनीति के युगान्तकारी राजनैतिक प्रभावों को जन्म देने वाले विराट संगठन के रूप में उभरने की आधारशिला प्रदान की। और इसी नींव पर आज दुनिया की सबसे बड़ी राजनैतिक दल के रूप में भाजपा विराजमान है।

अटलजी ने भाजपा के द्वारा भारत के उस सांस्कृतिक और आर्थिक पुनर्जागरण की आधारशिला रखी, जो 21वीं सदी में मोदी जी के अगुआई में वैश्विक नेतृत्व में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए पूरी तरह तैयार है।

बीज जो वटवृक्ष बना

अटल जी की राजनीतिक यात्रा उनके राष्ट्र के प्रति अटूट समर्पण और प्रतिकूल परिस्थितियों में अनुकूलन, नवाचार और नेतृत्व क्षमता का प्रमाण है। छात्र जीवन में 'भारत छोड़ो आंदोलन' से जुड़ने से लेकर भारतीय जनसंघ (बीजेएस) के संस्थापक सदस्य बनने और बाद में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) को सत्ता के शीर्ष तक पहुंचाने में, वाजपेयी जी का रास्ता समर्पण, दृढ़ता और दूरदर्शिता से भरा हुआ था।

वाजपेयी जी की वैचारिक नींव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से उनकी प्रारंभिक संबद्धता से गहराई से प्रभावित थी। इस जुड़ाव ने उनके राष्ट्रवाद और शासन के दृष्टिकोण को आकार दिया। 1951 में उन्होंने डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी के साथ भारतीय जनसंघ की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जनसंघ के शुरुआती दिनों में वाजपेयी जी ने सक्रिय रूप से 'कश्मीर सत्याग्रह' में भाग लिया, जो जम्मू और कश्मीर राज्य को लेकर भारतीय नागरिकों पर लगाए गए प्रतिबंधों को हटाने की वकालत करता था। उन्होंने लियाकत-नेहरू समझौते का कड़ा विरोध भी किया, जो श्री मुखर्जी के मजबूत और एकीकृत भारत के दृष्टिकोण के अनुरूप था। इन मुद्दों पर उनकी स्पष्टता और दृढ़ विश्वास ने उन्हें पार्टी में एक सम्मानित नेता और राष्ट्रीय स्तर पर एक प्रभावशाली स्वर बनाया। यह उनकी अद्वितीय नेतृत्व क्षमता का प्रमाण था, जिसने भारतीय राजनीति को नई दिशा देने की नींव रखी।

वाजपेयी जी की वैचारिक नींव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से उनकी प्रारंभिक संबद्धता से गहराई से प्रभावित थी। इस जुड़ाव ने उनके राष्ट्रवाद और शासन के दृष्टिकोण को आकार दिया। 1951 में उन्होंने डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी के साथ भारतीय जनसंघ की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जनसंघ के शुरुआती दिनों में वाजपेयी जी ने सक्रिय रूप से 'कश्मीर सत्याग्रह' में भाग लिया, जो जम्मू और कश्मीर राज्य को लेकर भारतीय नागरिकों पर लगाए गए प्रतिबंधों को हटाने की वकालत करता था। उन्होंने लियाकत-नेहरू समझौते का कड़ा विरोध भी किया, जो श्री मुखर्जी के मजबूत और एकीकृत भारत के दृष्टिकोण के अनुरूप था

1957 में निर्वाचित होकर संसद पहुंचे अटल बिहारी वाजपेयी जी के तिब्बत संकट और 1962 के चीन के आक्रमण पर दिए गए भाषणों ने देश पर गंभीर और अमिट छाप छोड़ी। उनकी वाक्पटुता और गहन विश्लेषण ने उन्हें भारतीय राजनीति में एक प्रमुख स्वर के रूप में स्थापित किया। वह भारतीय जनसंघ का प्रमुख चेहरा बन गए, जो अपने करिश्मे और जनता से जुड़ने की अद्वितीय क्षमता के लिए जाने जाते थे। सीमित संसाधनों के बावजूद वाजपेयी जी ने देशभर में लगातार यात्राएं कीं, ज्यादातर ट्रेन, बस या सड़क मार्ग से और अक्सर पार्टी कार्यकर्ताओं के घरों में ठहरते थे। ये जमीनी प्रयास जनसंघ के संगठनात्मक ढांचे को मजबूत करने में अत्यंत महत्वपूर्ण थे।

1962 के चीन का आक्रमण भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। कांग्रेस पार्टी से जनता का मोहभंग बढ़ने लगा और विपक्षी नेताओं के बीच गठबंधन बनने शुरू हो गए। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नेतृत्व में जनसंघ ने एक मजबूत संगठनात्मक संरचना विकसित की, जिसके परिणामस्वरूप 1967 के चुनावों में महत्वपूर्ण चुनावी सफलताएं मिलीं। पार्टी ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में बहुमत हासिल किया और उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और पंजाब जैसे राज्यों में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई। यही वह दौर था जब अटल जी को नेहरू जी ने कहा था कि यह युवा सांसद एक दिन उनकी कुर्सी पर आसीन होगा।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के

1975-77 के आपातकाल का दौर वाजपेयी और जनसंघ दोनों के लिए एक निर्णायक समय था। उन्होंने निरंकुशता का विरोध करने और लोकतांत्रिक मानदंडों की बहाली की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चुनौतियों के बावजूद उनके नेतृत्व ने सुनिश्चित किया कि पार्टी अपने सिद्धांतों के प्रति अडिग रहे। आपातकाल के बाद बना जनता पार्टी का संक्षिप्त प्रयोग अंततः असफल साबित हुआ, जिससे गठबंधन के भीतर जनसंघ असहज हो गया

असामयिक निधन के बाद अटल बिहारी वाजपेयी ने जनसंघ का नेतृत्व संभाला। पार्टी के मूल सिद्धांतों को बनाए रखते हुए और व्यापक राजनीतिक गठबंधनों की आवश्यकता को संतुलित करते हुए उन्होंने एक सम्मानित राष्ट्रीय नेता के रूप में अपनी पहचान बनाई। 1971 के युद्ध के दौरान वाजपेयीजी ने दलगत राजनीति से ऊपर उठकर सरकार को अपना पूर्ण समर्थन देकर अपनी परिपक्वता और राष्ट्रीय दृष्टिकोण का परिचय दिया। 1974 में उन्होंने श्री जयप्रकाश नारायण द्वारा शुरू किए गए आंदोलन में जनसंघ की सक्रिय भागीदारी का नेतृत्व किया, जिससे लोकतंत्र और न्याय के लिए लड़ाई को मजबूती मिली।

1975-77 के आपातकाल का दौर वाजपेयीजी और जनसंघ दोनों के लिए एक निर्णायक समय था। उन्होंने निरंकुशता का विरोध करने और लोकतांत्रिक मानदंडों की बहाली की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चुनौतियों के बावजूद उनके नेतृत्व ने सुनिश्चित किया कि पार्टी अपने सिद्धांतों के प्रति अडिग रहे। आपातकाल के बाद बनी जनता पार्टी का संक्षिप्त प्रयोग अंततः असफल साबित हुआ, जिससे गठबंधन के भीतर जनसंघ असहज हो गया।

भाजपा— भारत के राष्ट्रवाद का समवेत स्वर

1980 में जनता पार्टी गठबंधन के विघटन के बाद अटल जी ने भारतीय जनसंघ को पुनर्गठित कर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के रूप में स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई। भाजपा के पहले अध्यक्ष के रूप में वाजपेयी जी ने पार्टी की वैचारिक नींव रखी, जिसमें राष्ट्रवादी जड़ों को व्यापक राष्ट्रीय हितों के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया। उनके नेतृत्व में भाजपा ने समाजवाद और भारतीय राष्ट्रवाद को अपने मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में अपनाया, जिससे पार्टी को एक मध्यमार्गी दृष्टिकोण मिला। वाजपेयी जी की उदार छवि और समावेशिता पर जोर ने व्यापक जनसमर्थन आधार जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व ने भाजपा के शुरुआती संघर्षों के दौरान पार्टी को जीवित रखा और धीरे-धीरे मुख्यधारा की राजनीतिक पार्टी के रूप में स्वीकार्यता दिलाई। पार्टी का मत प्रतिशत 1984 के 7.74% से बढ़कर 1991 में 20.1% हो गया और यह अटल जी के नेतृत्व की देन थी।

वाजपेयी जी की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि उन्होंने राष्ट्रवाद को इस तरह प्रस्तुत किया जो भारतीय मतदाताओं के साथ समवेत स्वर हुआ। कठोर रुख अपनाने वाले नेताओं से अलग वाजपेयी जी का दृष्टिकोण उदारता और व्यावहारिकता से प्रेरित था, इसका लाभ विशेष रूप से कठिन समय में परिलक्षित हुआ। 1992 के बाद वाजपेयी जी के नेतृत्व ने भाजपा को उस राजनीतिक अलगाव से उबरने में मदद की और इसके बाद पार्टी ने क्षेत्रीय दलों के साथ रणनीतिक गठबंधन बनाने में सफलता प्राप्त की।

गठबंधन धर्म के वास्तविक नेता

2009 तक अपने 65 वर्षों के सक्रिय सार्वजनिक जीवन में अटल जी ने लगभग 56 वर्ष विपक्ष में और केवल नौ वर्ष सत्ता में बिताए। उनेक राजनैतिक जीवन की यह यात्रा भविष्य में शुचिता और सिद्धांतों की राजनीति की मार्गदर्शिका सिद्ध होगी। 1990 के दशक में वाजपेयी का नेतृत्व भारतीय जनता पार्टी के लिए एक

महत्वपूर्ण मोड़ था। गठबंधन राजनीति की जटिलताओं को सुलझाने की उनकी क्षमता उस समय स्पष्ट हुई जब वह 1996 में भारत के प्रधानमंत्री बने, हालांकि यह कार्यकाल केवल 13 दिनों का था। परन्तु अटल जी के संसद में दिए भाषण ने सम्पूर्ण भारत के विपुल जनसमुदाय को अपने भावनाओं में बांध लिया। अटल जी के साथ हुए राजनैतिक छल का उत्तर जनता 1998 में अपने वोटों से दिया और फिर से अटल जी ने सत्ता में वापसी की।

1998 से 2004 तक अपने कार्यकाल के दौरान वाजपेयी जी ने 20 से अधिक पार्टियों के गठबंधन को एकजुट रखने में अद्वितीय राजनैतिक क्षमता का प्रदर्शन किया। यह भारतीय संविधान में लोकतंत्र की भावना और उसकी अखंडता को स्वीकार कर सबको साथ चलने का एक अनोखा उदाहरण था। उनकी सरकार की स्थिरता ने इस विचार को खारिज कर दिया कि गठबंधन सरकारें स्वाभाविक रूप से कमजोर होती हैं। उनके नेतृत्व में भाजपा का सीट शेयर 1998 के आम चुनावों में महत्वपूर्ण रूप से बढ़कर 182 तक पहुंच गया, जो उनकी व्यापक लोकप्रियता और रणनीतिक दूरदृष्टि का प्रमाण था।

उत्कृष्ट संगठन शिल्पी

अटल जी का नेतृत्व भाजपा में एकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण था, वे अक्सर पार्टी के विभिन्न दृष्टिकोणों के बीच मध्यस्थता करते थे। उनके मध्यम दृष्टिकोण ने भाजपा को एक राष्ट्रवादी पार्टी के रूप में कांग्रेस से अलग देश को लिए एक बेहतर और विश्वसनीय विकल्प के रूप में विकसित किया।

वाजपेयी जी के प्रधानमंत्री बनने के दौरान ऐतिहासिक आर्थिक सुधारों की शुरुआत हुई। भ्रष्टाचार विहीन, शुचिता-पारदर्शिता पूर्ण शासन ने भाजपा की पहचान एक साफ-सुथरी पार्टी के रूप में पहचान दिया। गोल्डन क्वाड्रिलैटरल हाईवे परियोजना और प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ने भारत की आधारभूत संरचना में क्रांति ला दिया। तमाम परियोजनाएं जो कनेक्टिविटी बढ़ाने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाई गई थीं, इसने भाजपा की छवि को एक विकासात्मक पार्टी के रूप में मजबूत किया।

वाजपेयी जी की विदेश नीति के सार्थक क़दमों, जिसमें लाहौर बस सेवा और पाकिस्तान के साथ आगरा शिखर सम्मेलन शामिल, अमेरिका-इजराइल के साथ संबंधों में गहराई ने उनके शांति, विकास और संवाद के प्रति समर्पण को उजागर किया। कारगिल युद्ध जैसे चुनौतियों के बावजूद अटल जी के राजनैतिक कौशल ने भारत की वैश्विक स्थिति को बेहतर किया। 1998 में परमाणु परीक्षणों का निर्णय भारत की रणनीतिक स्वतंत्रता को प्रदर्शित करता है, जिसने उन्हें एक निर्णायक नेता के रूप में स्थापित किया।

अपने ओजस्वी भाषणों के लिए प्रसिद्ध वाजपेयीजी के भाषण अक्सर जनमानस में गहरी छाप छोड़ते थे। जटिल मुद्दों को सरलता से समझाने और काव्यात्मक शैली में प्रस्तुत करने की उनकी क्षमता ने उन्हें अपने समय के सबसे लोकप्रिय नेताओं में से एक बना दिया। उनका यह आकर्षण भाजपा के लिए विभिन्न वर्गों से समर्थन जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

विरासत और दूरगामी प्रभाव

अटल बिहारी वाजपेयी जी के योगदान भाजपा के लिए मौलिक और क्रातिकारी थे। उनके कार्यकाल ने भाजपा को एक सीमांत राजनीतिक दल से एक प्रबल शक्ति में बदल दिया, जो भारत की राजनीतिक धारा को आकार देने में सक्षम बनी। उनके नेतृत्व में भाजपा ने न केवल राजनीतिक वैधता हासिल की, बल्कि नरेन्द्र मोदीजी जैसे वैश्विक नेताओं के नेतृत्व के लिए आधारशिला का निर्माण किया।

वाजपेयी जी का यह दृष्टिकोण कि वैचारिक प्रतिबद्धता को व्यावहारिक शासन के साथ जोड़ना चाहिए, भाजपा के लिए एक नीति निर्देशक तत्व बनकर रणनीति और दृष्टिकोण को प्रेरित करता है।

अटल बिहारी वाजपेयी जी का भाजपा के निर्माण में योगदान अतुलनीय है। भारतीय जनसंघ को एक आधुनिक राजनीतिक दल में बदलने से लेकर भारत को परिवर्तनकारी वर्षों से गुजरते हुए नेतृत्व देने तक, उनकी दृष्टि और नेतृत्व आज भी प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं। उनकी विरासत केवल उस नेता की नहीं है जिसने अपनी पार्टी को सत्ता के शीर्ष तक पहुंचाया, बल्कि एक ऐसे राजनेता की भी है जिसने एक प्रगतिशील, समावेशी और वैश्विक रूप से सम्मानित भारत की कल्पना की। भाजपा की शासन पद्धति और विचारधारा में अटल जी का प्रतिबिम्ब मौजूद है, जिससे वह भारतीय लोकतंत्र और राजनीतिक कुशलता के एक स्थायी प्रतीक बने हुए हैं। ■

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री एवं राज्यसभा सांसद हैं)

1998 से 2004 तक अपने कार्यकाल के दौरान वाजपेयी जी ने 20 से अधिक पार्टियों के गठबंधन को एकजुट रखने में अद्वितीय राजनैतिक क्षमता का प्रदर्शन किया। यह भारतीय संविधान में लोकतंत्र की भावना और उसकी अखंडता को स्वीकार कर सबको साथ चलने का एक अनोखा उदाहरण था। उनकी सरकार की स्थिरता ने इस विचार को खारिज कर दिया कि गठबंधन सरकारें स्वाभाविक रूप से कमजोर होती हैं। उनके नेतृत्व में भाजपा का सीट शेयर 1998 के आम चुनावों में महत्वपूर्ण रूप से बढ़कर 182 तक पहुंच गया, जो उनकी व्यापक लोकप्रियता और रणनीतिक दूरदृष्टि का प्रमाण था

टीबी के मामले 2015 के प्रति 1,00,000 जनसंख्या पर 237 से घटकर 2023 में 195 हो गए

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल को वर्ष 2021-22, 2022-23 और 2023-24 के दौरान राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के तहत प्रगति से 22 जनवरी को अवगत कराया गया।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (2021-24) की उपलब्धियों की मुख्य बातें:

- टीबी के मामले 2015 के प्रति 1,00,000 जनसंख्या पर 237 से घटकर 2023 में 195 हो गए, इसी अवधि में टीबी मृत्यु दर 28 से घटकर 22 हो गई
- प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत 1.56 लाख निक्षय मित्र स्वयंसेवक 9.4 लाख से अधिक टीबी रोगियों की सहायता कर रहे हैं
- वित्त वर्ष 2023-24 तक आयुष्मान आरोग्य मंदिर केंद्रों की संख्या 1.72 लाख तक पहुंच जाएगी
- मातृ मृत्यु अनुपात (एमएमआर) 2014-16 में 130 प्रति लाख जीवित जन्मों से घटकर 2018-20 में 97 प्रति लाख हो गया है, जो 25 प्रतिशत की कमी को दर्शाता है। 1990 के बाद से इसमें 83 प्रतिशत की गिरावट आई है, जो वैश्विक गिरावट 45 प्रतिशत से अधिक है
- 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर (अंडर5 मोर्टलिटी रेट) 2014 में प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर 45 से घटकर 2020 में 32 हो गई है, जो 1990 के बाद से 60 प्रतिशत की वैश्विक कमी की तुलना में मृत्यु दर में 75 प्रतिशत की अधिक गिरावट को दर्शाता है
- राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन ने 2.61 करोड़ से अधिक व्यक्तियों का परीक्षण किया
- भारत ने खसरा-रूबेला टीकाकरण अभियान में 97.98 प्रतिशत कवरेज हासिल किया
- मलेरिया नियंत्रण के प्रयासों से मृत्यु दर और मामलों में कमी आई
- कालाजार उन्मूलन लक्ष्य सफलतापूर्वक पूरा हुआ
- भारत भर में टीकाकरण कार्यक्रमों पर नजर रखने के लिए यू-विन पायलट लॉन्च किया गया
- प्रधानमंत्री राष्ट्रीय डायलिसिस कार्यक्रम से वित्त वर्ष 2023-24 में 4.53 लाख से अधिक डायलिसिस रोगी लाभान्वित
- एनएचएम के तहत देशभर में 220 करोड़ कोविड-19 वैक्सीन की खुराक दी गई ■

वर्ष 2024 में रिकॉर्ड 24.5 गीगावाट सौर क्षमता और 3.4 गीगावाट पवन क्षमता जोड़ी गई

वर्ष 2024 में देश ने सौर और पवन ऊर्जा प्रतिष्ठानों, नीतिगत प्रगति और बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए महत्वपूर्ण प्रगति की, जिससे वर्ष 2025 में महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के लिए मंच तैयार हो गया। वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा क्षमता हासिल करने की प्रतिबद्धता के साथ भारत स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में ग्लोबल लीडर के रूप में उभर रहा है। उल्लेखनीय है कि 20 जनवरी, 2025 तक भारत की कुल गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा क्षमता 217.62 गीगावाट तक पहुंच गई है।

केंद्रीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा 22 जनवरी को जारी एक बयान के अनुसार वर्ष 2024 में रिकॉर्ड 24.5 गीगावाट सौर क्षमता और 3.4 गीगावाट पवन क्षमता जोड़ी गई, जो 2023 की तुलना में सौर प्रतिष्ठानों में दोगुने से अधिक वृद्धि और पवन प्रतिष्ठानों में 21 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाती है। यह बढ़ोतरी सरकारी प्रोत्साहन, नीतिगत सुधारों और घरेलू सौर और पवन टरबाइन विनिर्माण में बढ़े हुए निवेश के कारण संभव हुआ। ■

कैबिनेट ने 2025-26 सीजन के लिए कच्चे जूट के न्यूनतम समर्थन मूल्य को दी मंजूरी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने 22 जनवरी को विपणन सीजन 2025-26 के लिए कच्चे जूट के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को मंजूरी दी।

2025-26 सीज़न के लिए कच्चे जूट (टीडी-3 श्रेणी) का एमएसपी 5,650/- रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। यह अखिल भारतीय स्तर पर उत्पादन की भारित औसत लागत से 66.8 प्रतिशत अधिक की वापसी सुनिश्चित करेगा। विपणन सीजन 2025-26 के लिए कच्चे जूट का अनुशंसित एमएसपी, अखिल भारतीय स्तर पर उत्पादन की भारित औसत लागत से एमएसपी को कम से कम 1.5 गुना निर्धारित करने के सिद्धांत के अनुरूप है, जिसकी घोषणा सरकार द्वारा 2018-19 के बजट में की गयी थी।

विपणन सीजन 2025-26 के लिए कच्चे जूट का एमएसपी, पिछले विपणन सीजन 2024-25 की तुलना में 315/- रुपये प्रति क्विंटल अधिक है। भारत सरकार ने कच्चे जूट के एमएसपी को 2014-15 के 2400/-रुपये क्विंटल से बढ़ाकर 2025-26 के लिए 5,650/- रुपये प्रति क्विंटल किया है, इस प्रकार कच्चे जूट के एमएसपी में 3250/- रुपये प्रति क्विंटल (2.35 गुनी) की वृद्धि दर्ज की गयी है। ■

अभिनंदन! अभिनंदन! अभिनंदन!

भाजपा के नए प्रदेश अध्यक्ष

श्री के.एन. कास्मिकोया 12 जनवरी, 2025 को भाजपा, लक्षद्वीप प्रदेश के नए अध्यक्ष चुने गए

के.एन. कास्मिकोया

श्री दिलीप सैकिया 17 जनवरी, 2025 को भाजपा, असम प्रदेश के नए अध्यक्ष चुने गए

दिलीप सैकिया

श्री दामोदर 'दामू' नाइक 18 जनवरी, 2025 को भाजपा,गोवा प्रदेश के नए अध्यक्ष चुने गए

दामोदर 'दामू' नाइक

श्री किरण सिंह देव 17 जनवरी, 2025 को भाजपा, छत्तीसगढ़ प्रदेश के नए अध्यक्ष चुने गए

किरण सिंह देव

श्री रिकमन जी मोमिन 20 जनवरी, 2025 को भाजपा, मेघालय प्रदेश के नए अध्यक्ष चुने गए

रिकमन जी मोमिन

श्री जतिंदर पाल मल्होत्रा 18 जनवरी, 2025 को भाजपा, चंडीगढ़ के नए अध्यक्ष चुने गए

जतिंदर पाल मल्होत्रा

श्री बेंजामिन येपथोमी 21 जनवरी, 2025 को भाजपा, नागालैंड प्रदेश के नए अध्यक्ष चुने गए

बेंजामिन येपथोमी

श्री कलिंग मोयोंग 18 जनवरी, 2025 को भाजपा, अरुणाचल प्रदेश के नए अध्यक्ष चुने गए

कलिंग मोयोंग

श्री रवींद्र चव्हाण को 11 जनवरी, 2025 को भाजपा, महाराष्ट्र प्रदेश का नया कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया

रवींद्र चव्हाण

भाजपा के सभी नए प्रदेश अध्यक्षों ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केन्द्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा तथा समस्त पार्टी नेतृत्व द्वारा उन पर जताए भरोसे के लिए उनका आभार व्यक्त किया। कमल संदेश परिवार भी सभी नए प्रदेश अध्यक्षों को हार्दिक बधाई देता है।

मोदी स्टोरी

नरेन्द्र मोदी का ऑडियो लाइब्रेरी बनाने का सुझाव

—अरविंद संत, एनआरआई-यूएसए

श्री नरेन्द्र मोदी को 1990 के दशक में अमेरिकी सरकार द्वारा न्यूयॉर्क में युवा प्रतिनिधियों की एक बैठक में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम के बाद श्री मोदी ने अमेरिका में बसे प्रवासी भारतीय से मिलने के लिए 15 दिनों का दौरा किया। उस समय अमेरिका में रहने वाले भारतीय श्री अरविंद संत बताते हैं कि उन 15 दिनों के दौरान मुझे श्री मोदी को शहरों में घुमाने का सम्मान मिला। जब श्री मोदीजी न्यूयॉर्क आए, तो उन्होंने शहर के सभी कार्यकर्ताओं के साथ एक बैठक की व्यवस्था की। वे हमारे घर भी आए।

श्री संत कहते हैं, "गाड़ी चलाते समय श्री मोदी ने मुझसे रेडियो चालू करने और भाषण चलाने को कहा, जो कि काफी असामान्य था। उन्होंने एक ऑडियो लाइब्रेरी बनाने के

विचार पर भी चर्चा की, जहां लोग महान नेताओं के भाषण सुन सकें। यह अपने समय से बहुत आगे की अवधारणा थी।"

अगले 15 दिनों तक श्री मोदी पूरे अमेरिका में यात्रा करते रहे और कुछ कॉलेजों का दौरा किया। वह छात्रों से मिलकर उनकी तकनीकी रुचियों पर चर्चा करने और विकास की अवधारणा को लेकर उनके विचार जानने के लिए उत्सुक थे। हालांकि, उस समय वह केवल आरएसएस प्रचारक थे, लेकिन श्री नरेन्द्र मोदी का युवाओं से जुड़ने और तकनीक पर चर्चा करने का जुनून बेहद प्रभावी था।

वह अभी तक कोई बड़ी राजनीतिक हस्ती नहीं थे, लेकिन उनकी जिज्ञासा एवं हर किसी से सीखने की इच्छा, चाहे वह युवा छात्र हों या अनुभवी पेशेवर, अलग थी। "नई अंतर्दृष्टि प्राप्त करने और ज्ञान साझा करने की उनकी ललक बेहद ही प्रभावी थी।" श्री मोदी की अमेरिकी यात्रा ने प्रवासी भारतीय से जुड़ने और भारत की प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी एवं शिक्षा का उपयोग करने के उनके दृष्टिकोण को आकार देने में मदद की। ■

कमल पुष्प

सेवा, समर्पण, त्याग, संघर्ष एवं बलिदान

राधेश्याम ठाकुर

श्री राधेश्याम ठाकुर वर्ष 1970 में भारतीय जनसंघ में शामिल हुए। इस दौरान उनका संपर्क नानाजी देशमुख जी से हुआ। आपातकाल के दौरान वह आंतरिक सुरक्षा अधिनियम (मीसा) के तहत जेल गए। इस दौरान वह दरभंगा, हजारीबाग एवं मुजफ्फरपुर जेलों में रहे। 1980 में श्री राधेश्याम ठाकुर भाजपा से जुड़े और बिहार में जमीनी स्तर पर पार्टी संगठन को मजबूत करने के लिए लगातार काम किया। ■

श्री राधेश्याम ठाकुर

Date of Birth
01/07/1953

Gender
male

State
Bihar

District
Samastipur

Town/City
राजपा, कल्याणपुर, समस्तीपुर

Level
District

Post in Organisation
District Executive Member

Active years
1970-2020

दल में अनुशासन का वही स्थान है जो समाज में धर्म का है

सुन्दर सिंह भंडारी

दीनदयाल उपाध्यायजी एक विचारक राजनेता थे। उन्होंने मानव-कल्याण के लिये एकात्म मानववाद के रूप में एक जीवन-दर्शन की स्थापना की, जो उनके चिन्तन एवं अनुसंधान की सूक्ष्म दृष्टि का परिचायक है। वे आवश्यक समझते थे कि 'स्व' का विचार किया जाय। बिना उसके स्वराज्य का कोई अर्थ नहीं; स्वतंत्रता हमारे विकास और सुख का साधन नहीं बन सकती। जब तक हमें अपनी वास्तविकता का पता नहीं, तब तक हमें अपनी शक्तियों का ज्ञान नहीं हो सकता और न उनका विकास ही सम्भव है। परतंत्रता में समाज का 'स्व' दब जाता है, इसलिये सभी राष्ट्र स्वराज्य की कामना करते हैं ताकि वे अपनी प्रकृति, गुण और धर्म के अनुसार प्रयत्न करते हुए सुख की अनुभूति कर सकें। प्रकृति बलवती होती है। उसके प्रतिकूल काम करने से अथवा उसकी ओर दुर्लक्ष्य करने से कष्ट होते हैं। प्रकृति का उन्नयन कर उसे 'संस्कृति' बनाया जा सकता है, पर उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। व्यक्ति के समान राष्ट्र को भी प्रतिकूल चलने पर अनेक व्यथाओं का शिकार बनना पड़ता है। पण्डितजी का यह विश्लेषण देश की अनेक समस्याओं के लिये खरा उतरता है।

उन्होंने अपने चिंतन का निष्कर्ष निकाला कि व्यक्ति और समाज में विरोध मानना भूल है। विकृतियों अथवा अव्यवस्था पर चिंता होना अपने स्थान पर उचित है, पर मूल सत्य यही है कि व्यक्ति और समाज अभिन्न और अविभाज्य हैं। सुसंस्कृत अवस्था यही है कि व्यक्ति अपनी चिंता करते हुए भी समाज की चिंता करेगा। दोनों की सामान्य स्थिति है, पूरकता। समाज को हानि पहुंचाकर अपनी भलाई का जो विचार करेगा, वह गलत सोचेगा। यह विकृत अवस्था है। इसमें उसका भी भला होने वाला नहीं है, क्योंकि समाज जिस स्थिति में पहुंचेगा उसे व्यक्ति को भी भोगना पड़ेगा।

पण्डित जी कहते थे कि व्यक्ति और समाज के हितों में संघर्ष मानकर व्यक्ति के स्वातंत्र्य को सीमित कर दिया जाय, तो मनुष्य यंत्र का पुर्जा मात्र रह जाता है। यह सम्बन्ध भारतीय संस्कृति और परम्परा से मेल नहीं खाता। यहां तो दोनों का समन्वय चाहिए। व्यक्ति का समर्पण समाज के लिये आवश्यक है, साथ ही व्यक्ति को समर्थ बनाने और विकास करने में सब प्रकार की स्वतंत्रता देने का काम समाज का है।

पं. दीनदयालजी धर्म को एक व्यापक तत्व मानते थे। इसमें कई सम्प्रदाय सम्मिलित हैं, कई उपासना-पद्धतियां हैं। उपासना व्यक्ति-धर्म का एक अंग हो सकती है, किन्तु धर्म तो जीवन के सभी पहलुओं से सम्बन्ध रखता है। उससे समाज व सृष्टि की धारणा होती है। राज्य का आधार भी वे धर्म को ही मानते थे। अकेली दण्डनीति राज को नहीं चला सकती। समाज में धर्म न हो तो राज्य टिक नहीं सकता। भोजन उपलब्ध होने के उपरान्त कब, कहां, कितना, कैसा, और कैसे उसका उपभोग हो, यह तो धर्म ही निश्चित करेगा। मनुष्य की मनमानी को रोकने तथा उसके स्वेच्छाचार पर प्रतिबन्ध लगाने में भी धर्म ही सहायक होता है। धर्म वही है जो सबके लिये लाभकर हो।

प्रकृति को ध्येय की सिद्धि के लिये अनुकूल बनाना संस्कृति है और उसके प्रतिकूल बनाना विकृति। संस्कृति, प्रकृति की अवहेलना नहीं करती, उसकी ओर दुर्लक्ष्य भी नहीं करती, बल्कि उसे अधिक सुखमय एवं हितकर बनाने वाले भावों को बढ़ावा देती है तथा इसमें बाधा पहुंचाने वाली प्रवृत्तियों को रोकती है। पण्डितजी का दृढ़ विश्वास था कि यदि हम भारत की आत्मा को समझना चाहते है तो उसे राजनीति अथवा अर्थनीति के चश्मे से न देखकर सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखना होगा। भारतीयता की अभिव्यक्ति राजनीति के द्वारा न होकर उसकी संस्कृति के द्वारा ही होगी। विश्व को यदि हम कुछ सिखा सकते हैं तो उसे अपनी सांस्कृतिक सहिष्णुता एवं कर्त्तव्य-प्रधान जीवन की ही शिक्षा दे सकते है।

भारतीय संस्कृति की विशेषता यह है कि यह सम्पूर्ण जीवन का संकलित विचार करती है। उसका दृष्टिकोण एकात्मवादी है। टुकड़े-टुकड़े में विचार करना विशेषज्ञ की दृष्टि से भले ही ठीक हो, परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं हैं। शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा इन चार पक्षों में से किसी एक से भी व्यक्ति पिंड नहीं छुड़ा सकता और न इनमें से केवल एक पर विशेषज्ञ की भांति विचार कर उसी एक के आधार पर मनुष्य को सुखी बनाया जा सकता है। यह ध्यान रखना होगा कि एक भूख को मिटाने के प्रयत्नों में हम दूसरी भूख पैदा न कर दें। चारों पक्षों की सन्तुलित एकात्मता ही सही मनुष्य का निर्माण कर सकती है।

राष्ट्रवादी होने के नाते पण्डितजी राष्ट्र के पुनर्निर्माण की समस्याओं के सम्बन्ध में बड़े चिन्तित रहते थे। उन्होंने पाश्चात्य देशों तथा प्राचीन भारत की विभिन्न विचारधाराओं का अध्ययन किया। उनका मस्तिष्क अतीत से जुड़ा हुआ था, वर्तमान में सक्रिय रहता था तथा भविष्य की चिन्ता करता रहता था। वे जीवन-सम्बन्धी भारतीय मान्यताओं तथा आधुनिक वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के बीच तालमेल बैठाना चाहते थे। वे आधुनिक

युग की मांगों को धर्म के सनातन आदर्शों के आधार पर पूर्ण करना चाहते थे।

उनका स्पष्ट मत था कि अनेक पुरानी संस्थाएं बदलेंगी और नयी जन्म लेंगी। इस परिवर्तन के कारण, जिनका पुरानी संस्थाओं में निहित स्वार्थ है, उन्हें धक्का लगेगा। कुछ लोग जो स्वभाव से ही अपरिवर्तनवादी है, उन्हें भी सुधार और सृजन के इन प्रयत्नों से कुछ कष्ट होगा। किन्तु बिना औषधि के रोग ठीक नहीं होता और व्यायाम का कष्ट उठाये बिना बल भी नहीं आता। अतः वे कहते थे कि हमें यथास्थिति का मोह त्यागकर नवनिर्माण करना चाहिए। हमारी रचना में प्राचीन के प्रति अश्रद्धा या अवज्ञा का भाव न रहे, किन्तु उससे चिपटे रहने की आवश्यकता नहीं है।

पण्डितजी राजनीतिक दलों को सत्तालोभी व्यक्तियों का समुच्चय मात्र नहीं मानते थे, वरन् सत्ता हस्तगत करने की इच्छा से अलग, एक विशिष्ट उद्देश्य से युक्त संस्था कहते थे। ऐसे दल के छोटे-बड़े सभी कार्यकर्ताओं में किसी उद्देश्य के प्रति निष्ठा होनी चाहिए। दल के लिये अनुशासन का वही स्थान है जो समाज के लिये धर्म का।

दल के कार्यकर्ताओं में अनुशासन का प्रश्न न केवल उसे पूर्ण स्वस्थ रखने के लिये, अपितु सामान्य रूप से जनता के आचरण पर उसके प्रभाव की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। जनता में विधि-व्यवस्था का संरक्षक बनने की आकांक्षा रखने वाले दल इस दिशा में स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करें। यदि राजनीतिक दल स्वयं अपने को शासित नहीं कर सकते, तो समाज में स्वशासन की इच्छा उत्पन्न करने की आशा कैसे कर सकते हैं? समाज के लिए व्यक्तिगत स्वातंत्र्य की गारंटी और रक्षा आवश्यक है और व्यक्ति के लिये सर्वसामान्य की इच्छा का स्वेच्छया समादर करना वांछनीय है। यह सहिष्णु भावना जितनी अधिक होगी, राज्य के अदम्य अधिकार उतने की कम हो जायेंगे। इसलिये दलों के लिये यह आवश्यक है कि वे अपने सदस्यों के लिये एक आचरण-संहिता निर्धारित करें तथा उसका कड़ाई से पालन करें।

पं० दीनदयाल जी संपत्ति तथा इसी जैसे अन्य अधिकारों को शाश्वत नहीं मानते थे। ये सभी समाजहित-सापेक्ष है। वास्तव में अधिकार व्यक्ति को इसलिये दिये जाते हैं कि उनके द्वारा वह अपने सामाजिक कत्तव्यों का निर्वाह कर सके। सिपाही को हथियार इसलिए दिया जाता है कि उससे वह समाज की रक्षा करे। यदि वह अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करता तो वह शस्त्र-धारण का अधिकारी नहीं रहेगा। इसी प्रकार व्यक्ति को सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकार इसलिए मिले हैं कि वह अपने कर्त्तव्यों का पालन करें। इस कार्य के लिये समय-समय पर अधिकारों की व्याख्या और मर्यादा में परिवर्तन आवश्यक हो जाता है। सम्पत्ति का कोई भी अधिकार समाज-निरपेक्ष नहीं हो सकता।

जिस प्रकार एक स्थान पर आर्थिक अथवा राजनीतिक सामर्थ्य का केन्द्रीकरण प्रजातंत्र के विरुद्ध है, वैसे ही एक व्यक्ति या संस्था के पास राजनीतिक, आर्थिक या सामाजिक शक्ति का केन्द्रीयकरण भी लोकतंत्र के मार्ग में बाधक है। जब किसी भी एक क्षेत्र की शक्ति केन्द्रित हो जाती है तो केन्द्रस्थ व्यक्ति अथवा अप्रत्यक्ष रीति से अन्य क्षेत्रों की शक्ति भी अपने हाथ में लेने का प्रयत्न करता है। यद्यपि मनुष्य का जीवन एक है और उसकी विभिन्न प्रवृत्तियां एक दूसरे की पूरक हैं, फिर भी उन प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाले निकाय अलग-अलग रहने चाहिए। साधारणतया राज्य की विभिन्न इकाइयों को प्रशासन के क्षेत्र से हटकर अर्थ के क्षेत्र में प्रवेश नहीं करना चाहिए। अतः पण्डितजी का मत था कि विकेन्द्रीकरण के साथ-साथ शक्तियों के विभक्तिकरण का भी विचार होना चाहिए।

'प्रत्येक को मताधिकार', जैसे राजनीतिक प्रजातंत्र का निष्कर्ष है, वैसे ही 'प्रत्येक को काम', यह आर्थिक प्रजातंत्र का मापदण्ड है। काम का यह अधिकार बेगार या बंधुआ मजदूरी से प्राप्त नहीं होता, जैसे कि कम्युनिस्ट देशों का 'वोट' प्रजातंत्रीय अधिकार का उपभोग नहीं है। काम प्रथम तो जीविकोपार्जन योग्य हो तथा द्वितीय, व्यक्ति को उसे चुनने की स्वतन्त्रता हो। यदि काम के बदले में राष्ट्रीय आय का न्यायोचित वितरण तथा किसी न किसी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था आवश्यक हो जाती है।

लोकतंत्र की एक व्याख्या यह भी की गयी है कि यह वाद-विवाद के द्वारा चलने वाला राज्य है। इस वाद-विवाद से लाभ तब ही होगा, जब हम दूसरे की बात को ध्यानपूर्वक सुनेंगे और उसमें जो सत्यांश होगा, उसको ग्रहण करने की इच्छा रखेंगे। यदि दूसरे का दृष्टिकोण समझने का प्रयत्न न करते हुए हम अपने ही दृष्टिकोण का आग्रह करते जायें, तो गला सुखाने के अतिरिक्त कोई लाभ नहीं होगा। भारतीय संस्कृति मानती है कि सत्य एकांगी नहीं होता। विविध कोणों से एक ही सत्य को देखा, परखा और अनुभव किया जा सकता है। इसलिए, इन विविधताओं के सामंजस्य के द्वारा जो सम्पूर्ण का आंकलन करने की शक्ति रखता है, वही तत्वदर्शी है, वही ज्ञाता है।

पं. दीनदयाल उपाध्यायजी ऐसे ही एक ज्ञाता थे। ■

{लेखक स्व. सुन्दर सिंह भंडारी जनसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) एवं गुजरात व बिहार के राज्यपाल थे}

पराक्रम दिवसः ओडिशा में नेताजी की विरासत का सम्मान

धर्मेन्द्र प्रधान

देश जहां एक ओर पराक्रम दिवस 2025 मनाने की तैयारी कर रहा है, वहीं इस वर्ष सभी की निगाहें ओडिशा के कटक पर टिकी हैं, जो भारत के सबसे साहसी नेताओं में से एक नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जन्मस्थली है। ऐतिहासिक बाराबती किला, जो इस वर्ष के समारोहों का केंद्र रहने वाला है, वह सदियों से ओडिशा के इतिहास का मूक गवाह रहा है।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को जानकीनाथ बोस के घर हुआ था, जो पेशे से वकील थे और 1880 के दशक में कटक, ओडिशा में आकर बस गए थे। अपने समृद्ध इतिहास एवं जीवंत बौद्धिक परंपराओं के साथ इस शहर ने एक ऐसे युवा के प्रारंभिक जीवन को आकार दिया, जो आगे चलकर ब्रिटिश साम्राज्य की ताकत को चुनौती देने वाला बन गया।

जनवरी 1909 में सुभाष चंद्र बोस ने कटक के रेवेनशॉ कॉलेजिएट स्कूल में दाखिला लिया। उनके जीवन के इस महत्वपूर्ण पड़ाव में उनकी बौद्धिक एवं नैतिक जागृति की शुरुआत हुई। बोस अपने प्रधानाध्यापक बेनी माधव दास की शिक्षाओं से बहुत प्रभावित थे, जिन्होंने उनमें उद्देश्य एवं अखंडता की भावना पैदा की। इस नींव को रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद और श्री अरबिंदो घोष की दार्शनिक शिक्षाओं ने पूरक बनाया, जिनके राष्ट्रवाद और आत्म-साक्षात्कार के आदर्श बोस के लिए जीवन भर मार्गदर्शक सिद्धांत बने रहे।

ओडिशा में छात्रों की सक्रियता का एक शानदार इतिहास रहा है, जिसका प्रभाव नेताजी के जीवन पर देखा जा सकता है। 1939 में जब बोस त्रिपुरी में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए, तो उन्हें कई युवा नेताओं का समर्थन मिला, जिनमें हरेकृष्ण महताब भी शामिल थे, जो बाद में ओडिशा के मुख्यमंत्री बने। युवा छात्र नेता के रूप में महताब ने सत्र में सक्रिय रूप से भाग लिया, जो ओडिशा की प्रतिरोध एवं सुधार की स्थायी भावना को दर्शाता है।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जीवन की शानदार उपलब्धियों का जश्न मनाने के लिए आरंभ किया गया 'पराक्रम दिवस' एकता और साहस के राष्ट्रीय उत्सव के रूप में विकसित हुआ है। कोलकाता में आयोजित पहले पराक्रम दिवस में नेताजी के इस शहर से जीवंत जुड़ाव पर प्रकाश डाला गया, जहां उन्होंने मेयर के रूप में कार्य किया और एक निडर नेता के रूप में एक स्थायी विरासत छोड़ी। दिल्ली के लाल किले में 2024 के समारोह में भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) को सलामी दी गई, जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण अध्याय को चिह्नित करता है और 2025 में यह समारोह वहीं लौट रहा है, जहां से यह सब शुरू हुआ था 'कटक'। यह वह शहर है, जिसने नेताजी की आकांक्षाओं को पोषित किया और उनके क्रांतिकारी दृष्टिकोण को आकार दिया। जबकि दिल्ली का लाल किला भारत के संघर्ष की परिणति का प्रतीक है, बाराबती किला इसकी उत्पत्ति को दर्शाता है, जहां नेताजी में दृढ़ संकल्प के बीज पहली बार बोए गए थे।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस पवित्रता की प्रतिमूर्ति थे। एक उल्का की तरह वह भारतीय आकाश में ऊपर उठे और अपने चमकदार व्यक्तित्व से क्षितिज को रोशन किया। एक साहसी नेता के रूप में नेताजी की यात्रा की विनम्र शुरुआत कटक में हुई; वह ओडिशा और अन्य राज्यों के युवाओं को प्रेरित करते रहे हैं। उनका जीवन नवाचार और राष्ट्र के प्रति देशभक्तिपूर्ण प्रतिबद्धता के आदर्शों का प्रमाण है। एक अमीर परिवार में पैदा होने के बावजूद नेताजी ने आत्म-बलिदान और अनुशासन का रास्ता चुना। स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के लिए भारतीय सिविल सेवा से उनका इस्तीफा व्यक्तिगत लाभ पर मूल्यों को प्राथमिकता देने के साहस का उदाहरण है। नेताजी के नेतृत्व ने हमारे राष्ट्र निर्माण पर गहरा प्रभाव छोड़ा।

नेताजी भारत की महानता में अटूट आस्था रखने वाले एक महान नेता थे। उन्होंने जाति, भाषा, धर्म और क्षेत्र के विभाजन से मुक्त एक ऐसे भारत की कल्पना की थी जो राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बंधा हो। उन्होंने कहा, "भौगोलिक, जातीय और ऐतिहासिक दृष्टि से भारत किसी भी खोजकर्ता के लिए अंतहीन विविधता प्रस्तुत करता है, फिर भी इस विविधता के पीछे एक

नेताजी सुभाष चंद्र बोस पवित्रता की प्रतिमूर्ति थे। एक उल्का की तरह वह भारतीय आकाश में ऊपर उठे और अपने चमकदार व्यक्तित्व से क्षितिज को रोशन किया। एक साहसी नेता के रूप में नेताजी की यात्रा की विनम्र शुरुआत कटक में हुई; वह ओडिशा और अन्य राज्यों के युवाओं को प्रेरित करते रहे हैं। उनका जीवन नवाचार और राष्ट्र के प्रति देशभक्तिपूर्ण प्रतिबद्धता के आदर्शों का प्रमाण है

मौलिक एकता है।" भारत की एकता को बढ़ावा देने के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता ने ही महात्मा गांधी को यह लिखने के लिए प्रेरित किया: "नेताजी के नेतृत्व में आईएनए की सबसे बड़ी उपलब्धि भारत के सभी धर्मों और जातियों के लोगों को एक झंडे के नीचे इकट्ठा करना एवं उनमें सभी सांप्रदायिक और संकीर्ण भावनाओं को पूरी तरह से खत्म करते हुए एकता की भावना भरना था। यह एक ऐसा उदाहरण है जिसका हमें अनुकरण करना चाहिए।"

नेताजी ने उत्तम आदर्शों का परिचय दिया, जो एक गैर-रूढ़िवादी और गैर-हठधर्मिता दृष्टिकोण में निहित है। उन्होंने जिस आईएनए की स्थापना की, वह देश की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने के लिए उनके अपरंपरागत और वैकल्पिक दृष्टिकोण का परिणाम था। नेताजी ने आईएनए को तीन शक्तिशाली शब्दों से प्रेरित किया, जो उनका सिद्धांत बन गए: 'इत्तेफाक, इत्तेमाद और कुर्बानी' - एकता, विश्वास और त्याग। अमृत काल में यदि हमारी अमृत पीढ़ी नेताजी के इन आदर्शों का पालन करती है, तो वह भारत को उसकी नियत महानता प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं, जिसे माननीय प्रधानमंत्री ने देश की स्वतंत्रता की शताब्दी तक 'विकसित भारत' के अपने दृष्टिकोण में व्यक्त किया है। यह वह सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी, जो हम नेताजी की स्मृति और बलिदान को दे सकते हैं।

पराक्रम दिवस-2025 हमारे युवाओं की बढ़ती महत्वाकांक्षाओं को पंख देने के लिए तैयार है। यह एक असाधारण उत्सव होगा, जिसमें तीन दिनों तक हमारे समृद्ध सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अनुभवों को पेश किया जाएगा। इस वर्ष के समारोह की मुख्य विशेषताओं में सांस्कृतिक प्रदर्शन, इमर्सिव प्रदर्शन और नेताजी के जीवन पर आधारित सैंड आर्ट प्रदर्शनियां शामिल हैं।

आज, ओडिशा के युवा एक शानदार विरासत को संरक्षित करने और राष्ट्र सेवा एवं उत्कृष्टता की ओर कदम बढ़ा रहे हैं और इसमें वह अग्रणी भी हैं। ओडिशा के युवाओं के लिए नेताजी का जीवन सेवा एवं ईमानदारी के साथ महानता की खोज के महत्व को रेखांकित करता है। उनके शुरुआती संघर्ष और बाद की उपलब्धियां अनुशासन, ज्ञान की खोज और मातृभूमि की सेवा के लिए किये गये अथक प्रयास में निहित थीं। ओडिशा के युवा राष्ट्र निर्माण के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाने के लिए अपनी ऊर्जा को चैनलाइज़ करके उनके दृढ़ संकल्प का अनुकरण कर सकते हैं, साथ ही विकास के राष्ट्रीय दृष्टिकोण के अनुरूप ओडिशा के विकास की परिकल्पना को साकार करने के लिए आगे बढ़ सकते हैं और इसे एक अग्रणी राज्य बना सकते हैं।

जब सूर्य बाराबती किले के ऊपर अस्त होगा, तो 'जय हिंद' की गूंज गूंजेगी, जो हमें एक ऐसे नेता की याद दिलाएगी जिसका जीवन कटक की धरती से प्रेरित था और जिसकी विरासत आज भी करोड़ों दिलों को प्रेरित करती है। इस पराक्रम दिवस पर हम न केवल नेताजी के जीवन की उपलब्धियों का जश्न मना रहे हैं, बल्कि उनके मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की भी पुष्टि कर रहे हैं, जिससे एक मजबूत और एकजुट भारत का उनका सपना और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। ■

(लेखक केंद्रीय शिक्षा मंत्री हैं)

नेताजी ने उत्तम आदर्शों का परिचय दिया, जो एक गैर-रूढ़िवादी और गैर-हठधर्मिता दृष्टिकोण में निहित है। उन्होंने जिस आईएनए की स्थापना की, वह देश की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने के लिए उनके अपरंपरागत और वैकल्पिक दृष्टिकोण का परिणाम था। नेताजी ने आईएनए को तीन शक्तिशाली शब्दों से प्रेरित किया, जो उनका सिद्धांत बन गए: 'इत्तेफाक, इत्तेमाद और कुर्बानी' - एकता, विश्वास और त्याग। अमृत काल में यदि हमारी अमृत पीढ़ी नेताजी के इन आदर्शों का पालन करती है, तो वह भारत को उसकी नियत महानता प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं, जिसे माननीय प्रधानमंत्री ने देश की स्वतंत्रता की शताब्दी तक 'विकसित भारत' के अपने दृष्टिकोण में व्यक्त किया है

बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ
'विकसित भारत' के लिए एक उत्कृष्ट पहल

अन्नपूर्णा देवी

भारत 2047 तक 'विकसित भारत' बनने की दिशा में आत्मविश्वास से आगे बढ़ रहा है और 'बेटी बचाओ—बेटी पढ़ाओ' (बीबीबीपी) जैसे कार्यक्रमों का प्रभाव इस यात्रा में स्पष्ट रूप से नजर आ रहा है। हमने महिला केंद्रित विकास से आगे बढ़कर महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास की यात्रा को तय किया है। स्वामी विवेकानंद ने एक बार कहा था, "जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होता, तब तक दुनिया के कल्याण की कोई संभावना नहीं है। एक पक्षी के लिए केवल एक पंख पर उड़ना संभव नहीं है।" इस कालातीत दृष्टि से प्रेरित होकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 22 जनवरी, 2015 को हरियाणा के पानीपत में 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' योजना का शुभारंभ किया। इस ऐतिहासिक पहल का उद्देश्य भारत में घटते बाल लिंग अनुपात (सीएसआर) पर सबका ध्यान केंद्रित करना था और यह सुनिश्चित करना था कि पूरे देश में लड़कियों एवं महिलाओं को अवसर, देखभाल और सम्मान मिले, जिनकी वह हकदार हैं।

2011 की जनगणना में हमारा लिंगानुपात (एसआरबी) 918 था, जो एक चिंताजनक स्थिति की ओर इशारा कर रहा था। यह सामाजिक पूर्वाग्रहों एवं निदान उपकरणों के दुरुपयोग का भी एक स्पष्ट संकेत था। इसके पश्चात् एक लक्षित कार्य योजना के साथ बीबीबीपी ने न केवल इस परिस्थिति में बदलाव लाने का प्रयास किया, बल्कि एक ऐसे भविष्य की नींव भी रखी, जहां अब महिलाएं नेतृत्व कर रही हैं और साथ ही आगे बढ़ रही हैं।

पिछले दशक में इस कार्यक्रम के तहत कुछ महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। स्वास्थ्य प्रबंधन सूचना प्रणाली के अनुसार राष्ट्रीय एसआरबी दर 2014-15 के 918 से बढ़कर 2023-24 में 930 हो गयी है। संस्थागत प्रसव 2014-15 के 61 प्रतिशत से बढ़कर 2023-24 में 97.3 प्रतिशत हो गया है, जबकि पहली तिमाही में प्रसवपूर्व देखभाल पंजीकरण दर 61 प्रतिशत से बढ़कर 80.5 प्रतिशत हो गयी है। माध्यमिक स्तर पर लड़कियों के लिए सकल नामांकन अनुपात 2014-15 के 75.51 प्रतिशत से बढ़कर 2021-22 में 79.4 प्रतिशत हो गया है। इसके अतिरिक्त, नवजात शिशुओं (लड़का-लड़की) के बीच शिशु मृत्यु दर में अंतर लगभग समाप्त हो गया है, जो जीवित रहने एवं देखभाल में समानता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

बीबीबीपी अभियान की सफलता ने जो कहानी लिखी वह आंकड़ों से कहीं आगे बढ़कर महिला सशक्तीकरण की गाथा को पुनः परिभाषित करने वाली है। 'यशस्विनी बाइक अभियान' जैसी पहल— जिसके तहत अक्टूबर 2023 में 150 महिला बाइकर्स ने 10,000 किलोमीटर की यात्रा की— भारत की बेटियों के अदम्य साहस का प्रतीक है। वर्ष 2022 में 'कन्या शिक्षा प्रवेश उत्सव' के तहत लगभग 100,786 स्कूल न जाने वाली लड़कियों को फिर से दाखिला दिया गया, जो जीवन में शिक्षा के महत्व को दिखाता है। कौशल विकास पर राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान कार्यबल में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी पर जोर दिया गया, जिससे हम महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के अपने दृष्टिकोण के और करीब पहुंचने में कामयाब हुए हैं।

स्वास्थ्य प्रबंधन सूचना प्रणाली के अनुसार राष्ट्रीय एसआरबी दर 2014-15 के 918 से बढ़कर 2023-24 में 930 हो गयी है। संस्थागत प्रसव 2014-15 के 61 प्रतिशत से बढ़कर 2023-24 में 97.3 प्रतिशत हो गया हैं, जबकि पहली तिमाही में प्रसवपूर्व देखभाल पंजीकरण दर 61 प्रतिशत से बढ़कर 80.5 प्रतिशत हो गयी हैं। माध्यमिक स्तर पर लड़कियों के लिए सकल नामांकन अनुपात 2014-15 के 75.51 प्रतिशत से बढ़कर 2021-22 में 79.4 प्रतिशत हो गया है। इसके अतिरिक्त, नवजात शिशुओं (लड़का-लड़की) के बीच शिशु मृत्यु दर में अंतर लगभग समाप्त हो गया है, जो जीवित रहने एवं देखभाल में समानता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है

इस परिवर्तनकारी कार्यक्रम के 10 वर्ष पूरे होने पर यह स्पष्ट है कि यह मिशन अभी खत्म नहीं हुआ है। अगर हमें 'विकसित भारत' बनना है तो यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि लड़कियां एवं महिलाएं हमारे राष्ट्र निर्माण के लिए किये जाने वाले प्रयासों के केंद्र में रहें। भारत तब तक विकसित नहीं हो सकता जब तक कि उसकी लड़कियां एवं महिलाएं अपनी पूरी क्षमता का इस्तेमाल नहीं कर पातीं। यह समय है जब हमें निर्णायक कदम उठाने

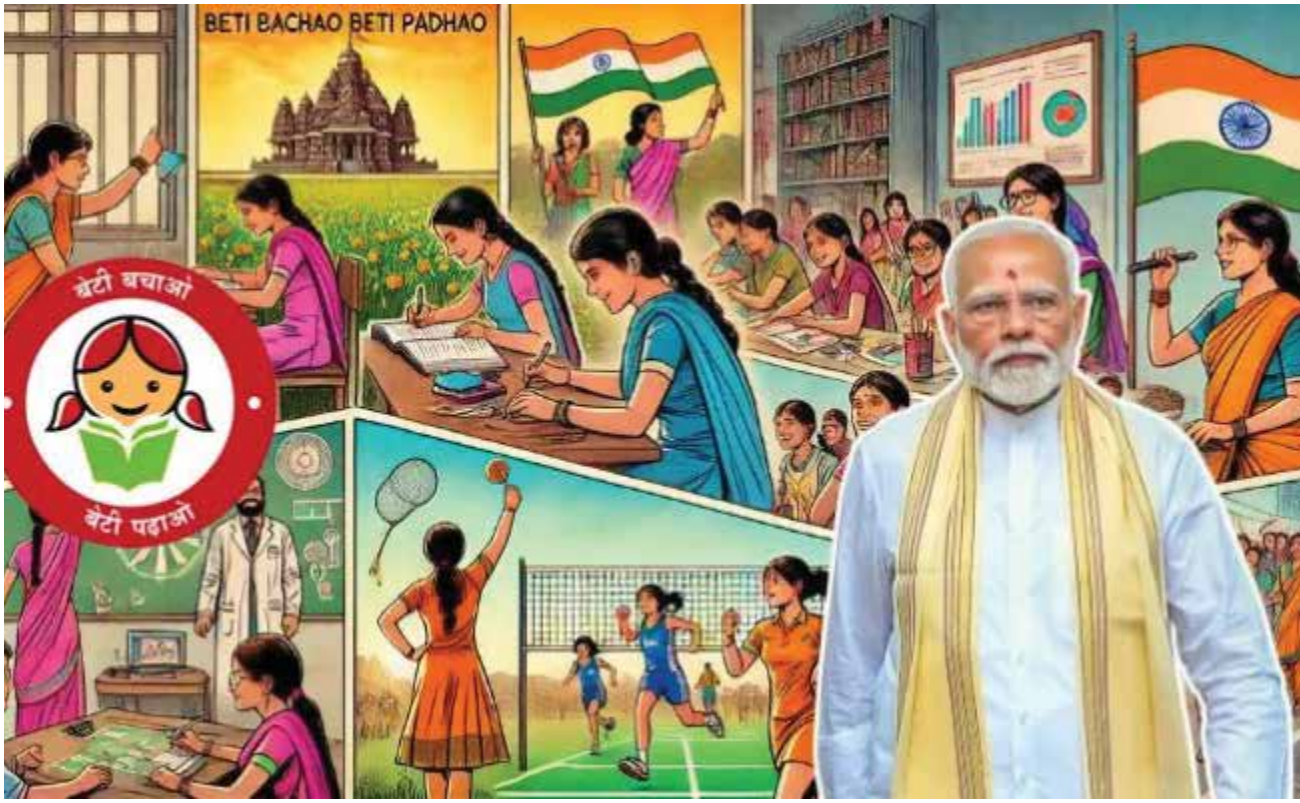

चाहिए। हमें 1994 के प्री-कॉन्सेप्शन एवं प्री-नेटल डायग्नोस्टिक टेक्नीक (PCPNDT) अधिनियम के क्रियान्वयन को और मजबूती से लागू करना होगा, शिक्षा में ड्रॉपआउट दरों को और कम करना होगा, कौशल विकास कार्यक्रमों का अधिक विस्तार करना होगा और लड़कियों के जीवन के हर चरण में लक्षित हस्तक्षेप प्रदान करना होगा।

भारत में महिला श्रम बल भागीदारी (FLFP) दर वित्त वर्ष 2024 में 41.7 प्रतिशत रही। हालांकि इसमें पिछले वर्षों की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, फिर भी यह पुरुषों की श्रम बल भागीदारी से कम है। यह भी उल्लेखनीय है कि शहरी क्षेत्रों में यह दर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कम है। भारत में बड़ी संख्या में महिलाएं अवैतनिक घरेलू देखभाल कार्यों में लगी हुई हैं। हमारा प्रयास न केवल महिलाओं को घरेलू दायरे से बाहर निकाल, रोजगार के बेहतर अवसर प्रदान करना है, बल्कि देखभाल कार्य को एक वैध करियर के रूप में बढ़ावा देने पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए, ताकि देखभाल कार्य में प्रशिक्षित महिलाएं वित्तीय स्वतंत्रता भी प्राप्त कर सकें और अपने प्रयासों से देश की आर्थिक वृद्धि में योगदान भी दे सकें। विश्व आर्थिक मंच के अनुसार कार्यबल में लैंगिक अंतर को कम करने से वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 20 प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है। भारत के लिए यह केवल एक अवसर नहीं है— यह एक आवश्यकता है। महिलाओं के नेतृत्व वाला विकास एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के हमारे लक्ष्य को प्राप्त करने और 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की अवधारणा के मध्य में है। बीबीबीपी कार्यक्रम एक ऐसा आंदोलन बन गया है जिसने लाखों लोगों को प्रेरित किया है और महिलाओं को भारत की प्रगति यात्रा में अग्रणी बना दिया है।

प्रधानमंत्री मोदीजी के नेतृत्व में हम ऐतिहासिक परिवर्तनों का गवाह बन रहे हैं। महिला विकास से लेकर महिला नेतृत्व वाले विकास तक भारत की बेटियां बदलाव लाने वाली, उद्यमी एवं एक नेतृत्वकर्ता के रूप में उभर रही हैं। वह अपनी विकास यात्रा की नेतृत्वकर्ता बन रही हैं। आइए हम सब मिलकर उनके सपनों को संजोएं और उनकी यात्रा को सशक्त बनाएं, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि जब भारत अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करेगा, तो वह एक ऐसे राष्ट्र के रूप में होगा, जहां हर महिला अपने भाग्य को आकार देने में भूमिका निभाएगी। ■

प्रधानमंत्री मोदीजी के नेतृत्व में हम ऐतिहासिक परिवर्तनों का गवाह बन रहे हैं। महिला विकास से लेकर महिला नेतृत्व वाले विकास तक भारत की बेटियां बदलाव लाने वाली, उद्यमी एवं एक नेतृत्वकर्ता के रूप में उभर रही हैं। वह अपनी विकास यात्रा की नेतृत्वकर्ता बन रही हैं। आइए हम सब मिलकर उनके सपनों को संजोएं और उनकी यात्रा को सशक्त बनाएं, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि जब भारत अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करेगा, तो वह एक ऐसे राष्ट्र के रूप में होगा, जहां हर महिला अपने भाग्य को आकार देने में भूमिका निभाएगी

(लेखिका केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री हैं)

18वां प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन, ओडिशा

'प्रवासी भारतीय दिवस' भारत और उसके प्रवासियों के बीच संबंधों को प्रगाढ़ करने वाली एक संस्था बन चुकी है: प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नौ जनवरी को ओडिशा के भुवनेश्वर में 18वें प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन का उद्घाटन किया। दुनिया के विभिन्न हिस्सों से आए सभी प्रतिनिधियों और प्रवासियों का स्वागत करते हुए श्री मोदी ने विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में दुनिया भर में विभिन्न भारतीय प्रवासी कार्यक्रमों में यह उद्घाटन गीत बजाया जाएगा।

एक वीडियो संदेश में उत्साहपूर्ण और स्नेह से भरे शब्दों के लिए मुख्य अतिथि त्रिनिदाद और टोबैगो की राष्ट्रपति क्रिस्टीन कार्ला कंगालू को धन्यवाद देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि वह भारत की प्रगति के बारे में भी चर्चा कर रही थीं और उनके शब्दों ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों पर प्रभाव डाला।

वर्ष 1915 में इसी दिन महात्मा गांधीजी लंबे समय तक विदेश में प्रवास के बाद भारत लौटे थे इसका स्मरण करते हुए श्री मोदी ने कहा कि ऐसे अद्भुत समय में भारत में प्रवासी भारतीयों की उपस्थिति ने उत्सव की भावना को और बढ़ा दिया है। उन्होंने कहा कि प्रवासी भारतीय दिवस का यह संस्करण एक और कारण से विशेष है। श्री मोदी ने कहा कि यह आयोजन श्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म शताब्दी के कुछ दिनों बाद आयोजित किया गया, जिनकी दूरदर्शिता प्रवासी भारतीय दिवस के लिए महत्वपूर्ण थी।

उन्होंने कहा कि प्रवासी भारतीय दिवस भारत और उसके प्रवासियों के बीच संबंधों को प्रगाढ़ करने वाली एक संस्था बन चुकी है। श्री मोदी ने उल्लेख किया कि हम सब मिलकर भारत, भारतीयता, अपनी संस्कृति और प्रगति का उत्सव मनाते हैं और साथ ही अपनी जड़ों से जुड़ते हैं।

श्री मोदी ने कहा कि ओडिशा की महान भूमि, जहां हम एकत्र हुए हैं, भारत की समृद्ध विरासत का प्रतिबिंब है। उन्होंने कहा कि ओडिशा में हर कदम पर हम अपनी विरासत देख सकते हैं।

भारतीय प्रवासियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए तथा वैश्विक मंच पर उन्हें गर्व से सिर ऊंचा करने का अवसर प्रदान करने के लिए उन्हें धन्यवाद देते हुए श्री मोदी ने कहा कि पिछले दशक में उन्होंने अनेक वैश्विक प्रमुखों से भेंट की, जिनमें से सभी ने भारतीय प्रवासियों की उनके सामाजिक मूल्यों तथा अपने-अपने समाजों में योगदान के लिए प्रशंसा की। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत न केवल लोकतंत्र की जननी है, बल्कि लोकतंत्र भारतीय जीवन का अभिन्न अंग है।

21वीं सदी के भारत में विकास की असाधारण गति और व्यापकता का उल्लेख करते हुए श्री मोदी ने कहा कि मात्र 10 वर्षों में भारत ने 250 मिलियन लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है और दुनिया की 10वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि भारत शीघ्र ही तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

चंद्रयान मिशन का शिव-शक्ति बिंदु तक पहुंचना और डिजिटल इंडिया की ताकत की वैश्विक मान्यता जैसी भारत की उपलब्धियों पर जोर देते हुए श्री मोदी ने कहा कि भारत में हर क्षेत्र नई ऊंचाइयों पर पहुंच रहा है। अक्षय ऊर्जा, विमानन, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी, मेट्रो नेटवर्क और बुलेट ट्रेन परियोजनाओं में रिकॉर्ड तोड़ रहा है। उन्होंने कहा कि भारत अब 'मेड इन इंडिया' लड़ाकू जेट और परिवहन विमान बना रहा है। श्री मोदी ने एक ऐसे भविष्य की कल्पना की, जहां लोग 'मेड इन इंडिया' विमानों में प्रवासी भारतीय दिवस के लिए भारत की यात्रा करेंगे।

गिरमिटिया विरासत का अध्ययन

प्रधानमंत्री ने गिरमिटिया विरासत का अध्ययन और शोध करने के महत्व का उल्लेख किया और इस उद्देश्य के लिए एक विश्वविद्यालय पीठ की स्थापना का प्रस्ताव रखा। श्री मोदी ने नियमित रूप से विश्व गिरमिटिया सम्मेलन आयोजित करने का भी आग्रह किया और अपनी टीम को इन संभावनाओं का पता लगाने और इन पहलों को आगे बढ़ाने की दिशा में कार्य करने के निर्देश दिए।

इस अवसर पर ओडिशा के राज्यपाल डॉ. हरि बाबू कंभमपति, ओडिशा के मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण मांझी, केंद्रीय मंत्री श्री एस. जयशंकर, श्री अश्विनी वैष्णव, श्री धर्मेंद्र प्रधान, केंद्रीय राज्य मंत्री श्री जुएल ओराम और कार्यक्रम में अन्य गणमान्य व्यक्तियों में सुश्री शोभा करंदलाजे, श्री कीर्ति वर्धन सिंह और श्री पबित्रा मार्गेरिटा उपस्थित थे। ■

आज हमारी सरकार पूरी ईमानदारी से ग्राम स्वराज को जमीन पर उतारने का प्रयास कर रही है: नरेन्द्र मोदी

स्वामित्व योजना के तहत अब गांवों में रहने वाले करीब 2.25 करोड़ लोगों को उनके घरों के लिए कानूनी दस्तावेज मिल चुके हैं

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 18 जनवरी को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 10 राज्यों और 2 केंद्रशासित प्रदेशों के 230 से अधिक जिलों के 50,000 से अधिक गांवों में संपत्ति मालिकों को स्वामित्व योजना के तहत 65 लाख से अधिक संपत्ति कार्ड वितरित किए। इस अवसर पर अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि आज का दिन भारत के गांवों और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए ऐतिहासिक दिन है और उन्होंने इस अवसर पर सभी लाभार्थियों और नागरिकों को बधाई दी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि पांच साल पहले स्वामित्व योजना की शुरुआत की गई थी, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोगों को उनके प्रॉपर्टी कार्ड मिलें। उन्होंने कहा कि अलग-अलग राज्य प्रॉपर्टी के मालिकाना हक के प्रमाणपत्रों को अलग-अलग नामों से पुकारते हैं, जैसे घरौनी, अधिकार अभिलेख, प्रॉपर्टी कार्ड, मालमत्ता पत्रक और आवासीय भूमि पट्टा। श्री मोदी ने कहा, "पिछले 5 वर्षों में 1.5 करोड़ से ज्यादा लोगों को स्वामित्व कार्ड दिए गए हैं।" आज के कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि 65 लाख से ज़्यादा परिवारों को ये कार्ड मिल चुके हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि स्वामित्व योजना के तहत अब गांवों में रहने वाले करीब 2.25 करोड़ लोगों को उनके घरों के लिए कानूनी दस्तावेज मिल चुके हैं।

उन्होंने कहा कि लाखों-करोड़ों की संपत्ति होने के बावजूद ग्रामीणों के पास अक्सर कानूनी दस्तावेजों की कमी होती है, जिससे विवाद होते हैं और यहां तक कि शक्तिशाली व्यक्तियों द्वारा अवैध कब्जा भी किया जाता है। श्री मोदी ने कहा कि कानूनी दस्तावेजों के बिना बैंक भी ऐसी संपत्तियों से दूरी बनाए रखते हैं। प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि पिछली सरकारों ने इस मुद्दे को हल करने के लिए ठोस कदम नहीं उठाए।

पिछले 5 वर्षों में 1.5 करोड़ से ज्यादा लोगों को स्वामित्व कार्ड दिए गए हैं। आज के कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि 65 लाख से ज़्यादा परिवारों को ये कार्ड मिल चुके हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि स्वामित्व योजना के तहत अब गांवों में रहने वाले करीब 2.25 करोड़ लोगों को उनके घरों के लिए कानूनी दस्तावेज मिल चुके हैं

स्वामित्व योजना के बारे में विस्तार से बताते हुए श्री मोदी ने कहा कि इसमें ड्रोन का इस्तेमाल करके गांवों में घरों और जमीनों की मैपिंग करना और ग्रामीणों को आवासीय संपत्तियों के कानूनी दस्तावेज प्रदान करना शामिल है। उन्होंने कहा कि इस योजना के लाभ अब दिखाई देने लगे हैं।

संपत्ति कार्ड आर्थिक सुरक्षा की एक बड़ी गारंटी

श्री मोदी ने कहा, "भारत में 6 लाख से ज्यादा गांव हैं, जिनमें से लगभग आधे गांवों में ड्रोन सर्वेक्षण पूरा हो चुका है।" उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि कानूनी दस्तावेज मिलने के बाद लाखों लोगों ने अपनी संपत्ति के आधार पर बैंकों से लोन लिया और अपने गांवों में छोटे-मोटे व्यवसाय शुरू किए। उन्होंने कहा कि इनमें से कई लाभार्थी छोटे और मध्यम किसान परिवार हैं, जिनके लिए ये संपत्ति कार्ड आर्थिक सुरक्षा की एक बड़ी गारंटी बन गए हैं।

श्री मोदी ने कहा कि दलित, पिछड़े और आदिवासी परिवार अवैध कब्जों और लंबे अदालती विवादों से सबसे अधिक प्रभावित हैं। उन्होंने कहा कि कानूनी प्रमाणीकरण के साथ अब वे इस संकट से मुक्त हो जाएंगे। श्री मोदी ने एक अनुमान का जिक्र किया कि एक बार सभी गांवों में संपत्ति कार्ड जारी हो जाने पर इससे 100 लाख करोड़ रुपये से अधिक की आर्थिक गतिविधियां शुरू हो जाएंगी। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि इससे देश की अर्थव्यवस्था में काफी बड़ी पूंजी जुड़ेगी।

जब युवा पीढ़ी अपनी सभ्यता के साथ गर्व से जुड़ जाती है, तो उसकी जड़ें और मजबूत होती हैं: नरेन्द्र मोदी

'कुंभ', 'पुष्करम' और 'गंगा सागर मेला' - हमारे ये पर्व - हमारे सामाजिक मेल-जोल को, सद्भाव को, एकता को बढ़ाने वाले पर्व हैं

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 19 जनवरी को मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 118वीं कड़ी की शुरुआत में कहा कि मैं सभी देशवासियो को 'गणतंत्र दिवस' की अग्रिम शुभकामनाएं देता हूं। इस बार का 'गणतंत्र दिवस' बहुत विशेष है। ये भारतीय गणतंत्र की 75वीं वर्षगांठ है। इस वर्ष संविधान लागू होने के 75 साल हो रहे हैं। मैं संविधान सभा के उन सभी महान व्यक्तित्वों को नमन करता हूं, जिन्होंने हमें हमारा पवित्र संविधान दिया। संविधान सभा के दौरान अनेक विषयों पर लंबी-लंबी चर्चाएं हुईं। वे चर्चाएं संविधान सभा के सदस्यों के विचार, उनकी वो वाणी हमारी बहुत बड़ी धरोहर है।

प्रयागराज में महाकुंभ का श्रीगणेश हो चुका है। चिरस्मरणीय जन-सैलाब, अकल्पनीय दृश्य और समता-समरसता का असाधारण संगम! इस बार कुंभ में कई दिव्य योग भी बन रहे हैं। कुंभ का ये उत्सव विविधता में एकता का उत्सव मनाता है। संगम की रेती पर पूरे भारत के, पूरे विश्व के लोग, जुटते हैं

श्री मोदी ने कहा कि प्रयागराज में महाकुंभ का श्रीगणेश हो चुका है। चिरस्मरणीय जन-सैलाब, अकल्पनीय दृश्य और समता-समरसता का असाधारण संगम! इस बार कुंभ में कई दिव्य योग भी बन रहे हैं। कुंभ का ये उत्सव विविधता में एकता का उत्सव मनाता है। संगम की रेती पर पूरे भारत के, पूरे विश्व के लोग, जुटते हैं। हजारों वर्षों से चली या रही इस परंपरा में कहीं भी कोई भेदभाव नहीं, जातिवाद नहीं। इसमें भारत के दक्षिण से लोग आते हैं, भारत के पूर्व और पश्चिम से लोग आते हैं। कुंभ में गरीब-अमीर सब एक हो जाते हैं।

उन्होंने कहा कि सब लोग संगम में डुबकी लगाते हैं, एक साथ भंडारों में भोजन करते हैं, प्रसाद लेते हैं- तभी तो 'कुंभ' एकता का महाकुंभ है। कुंभ का आयोजन हमें ये भी बताता है कि कैसे हमारी परम्पराएं पूरे भारत को एक सूत्र में बांधती हैं। उत्तर से दक्षिण तक मान्यताओं को मानने के तरीके एक जैसे ही हैं। एक तरफ प्रयागराज, उज्जैन, नासिक और हरिद्वार में कुंभ का आयोजन होता है, वैसे ही दक्षिण भू-भाग में गोदावरी, कृष्णा, नर्मदा और कावेरी नदी के तटों पर पुष्करम होते हैं। ये दोनों ही पर्व हमारी पवित्र नदियों से, उनकी मान्यताओं से जुड़े हुए हैं। इसी तरह कुंभकोणम से तिरुक्कड-यूर, कूड़-वासल से तिरुचेरई अनेक ऐसे मंदिर हैं, जिनकी परम्पराएं कुंभ से जुड़ी हुई हैं।

श्री मोदी ने कहा कि इस बार आप सबने देखा होगा कि कुंभ में युवाओं की भागीदारी बहुत व्यापक रूप में नजर आती है और ये भी सच है कि जब युवा पीढ़ी अपनी सभ्यता के साथ गर्व के साथ जुड़ जाती है, तो उसकी जड़ें और मजबूत होती हैं और तब उसका स्वर्णिम भविष्य भी सुनिश्चित हो जाता है। हम इस बार कुंभ के डिजिटल फुटप्रिंट्स भी इतने बड़े स्केल पर देख रहे हैं। कुंभ की ये वैश्विक लोकप्रियता हर भारतीय के लिए गर्व की बात है।

'पर्व' भारत के लोगों को भारत की परंपराओं से जोड़ते हैं

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि कुछ दिन पहले ही पश्चिम बंगाल में 'गंगा सागर' मेले का भी विहंगम आयोजन हुआ है। संक्रांति के पावन अवसर पर इस मेले में पूरी दुनिया से आए लाखों श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई है। 'कुंभ', 'पुष्करम' और 'गंगा सागर मेला'- हमारे ये पर्व - हमारे सामाजिक मेल-जोल को, सद्भाव को, एकता को बढ़ाने वाले पर्व हैं। ये पर्व भारत के लोगों को भारत की परंपराओं से जोड़ते हैं और जैसे हमारे शास्त्रों ने संसार में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष - चारों पर बल दिया है। वैसे ही हमारे पर्वों और परम्पराएं भी आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक - हर पक्ष को भी सशक्त करते हैं।

उन्होंने कहा कि इस महीने हमने 'पौष शुक्ल द्वादशी' के दिन रामलला के प्राण प्रतिष्ठा पर्व की पहली वर्षगांठ मनाई है। इस साल 'पौष शुक्ल द्वादशी' 11 जनवरी को पड़ी थी। इस दिन लाखों राम भक्तों ने अयोध्या में रामलला के साक्षात दर्शन कर उनका आशीर्वाद लिया। प्राण प्रतिष्ठा की ये द्वादशी भारत की सांस्कृतिक चेतना की पुनः प्रतिष्ठा की द्वादशी है। इसलिए पौष शुक्ल द्वादशी का ये दिन एक तरह से प्रतिष्ठा द्वादशी का दिन भी बन गया है। हमें विकास के रास्ते पर चलते हुए ऐसे ही अपनी विरासत को भी सहेजना है, उनसे प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़ना है।

उपग्रहों की स्पेस डॉकिंग

श्री मोदी ने कहा कि कुछ दिन पहले हमारे वैज्ञानिकों ने स्पेस सेक्टर

में ही एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की। हमारे वैज्ञानिकों ने उपग्रहों की स्पेस डॉकिंग कराई है। जब अंतरिक्ष में दो स्पेसक्रॉफ्ट जोड़े जाते हैं, तो इस प्रक्रिया को स्पेस डॉकिंग कहते हैं। यह तकनीक अंतरिक्ष में स्पेस स्टेशन तक सप्लाई भेजने और क्रू मिशन के लिए अहम है। भारत ऐसा चौथा देश बना है, जिसने ये सफलता हासिल की है।

उन्होंने कहा कि कुछ दिन पहले ही स्टार्टअप इंडिया के 9 साल पूरे हुए हैं। हमारे देश में जितने स्टार्टअप्स 9 साल में बने हैं उनमें से आधे से ज्यादा Tier 2 और Tier 3 शहरों से हैं और जब यह सुनते हैं तो हर हिन्दुस्तानी का दिल खुश हो जाता है यानी हमारा स्टार्टअप कल्चर बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं है और आपको यह जानकर हैरानी होगी कि छोटे शहरों के स्टार्टअप्स में आधे से ज्यादा का नेतृत्व हमारी बेटियां कर रही हैं। जब यह सुनने को मिलता है कि अंबाला, हिसार, कांगड़ा, चेंगलपट्टु, बिलासपुर, ग्वालियर और वाशिम जैसे शहर स्टार्टअप्स के सेंटर बन रहे हैं, तो 'मन' आनंद से भर जाता है।

देश की महान विभूति नेताजी सुभाष चंद्र बोस

श्री मोदी ने कहा कि पल-भर के लिए आप एक दृश्य की कल्पना कीजिए— कोलकाता में जनवरी का समय है। दूसरा विश्व युद्ध अपने चरम पर है और इधर भारत में अंग्रेजों के खिलाफ गुस्सा उफान पर है। इसकी वजह से शहर में चप्पे-चप्पे पर पुलिसवालों की तैनाती है। कोलकाता के बीचों–बीच एक घर के आस-पास पुलिस की मौजूदगी ज्यादा चौकस है। इसी बीच लंबा ब्राउन कोट, पैंट्स और काली टोपी पहने हुए एक व्यक्ति रात के अंधेरे में एक बंगले से कार लेकर बाहर निकलता है। मजबूत सुरक्षा वाली कई चौकियों को पार करते हुए वो एक रेलवे स्टेशन गोमो पहुंच जाता है। ये स्टेशन अब झारखंड में है। यहां से एक ट्रेन पकड़कर वो आगे के लिए निकलता है। इसके बाद अफगानिस्तान होते हुए वो यूरोप जा पहुंचता है और यह सब अंग्रेजी हुकूमत के अभेद किलेबंदी के बावजूद होता है।

उन्होंने कहा कि ये कहानी आपको फिल्मी सीन जैसी लगती होगी। आपको लग रहा होगा, इतनी हिम्मत दिखाने वाला व्यक्ति आखिर किस मिट्टी का बना होगा। दरअसल, ये व्यक्ति कोई और नहीं, हमारे देश की महान विभूति नेताजी सुभाष चंद्र बोस थे। 23 जनवरी यानी उनकी जन्म-जयंती को अब हम 'पराक्रम दिवस' के रूप में मनाते हैं। उनके शौर्य से जुड़ी इस गाथा में भी उनके पराक्रम की झलक मिलती है।

श्री मोदी ने कहा कि सुभाष बाबू एक विजनरी थे। साहस तो उनके स्वभाव में रचा-बसा था। इतना ही नहीं, वे बहुत कुशल प्रशासक भी थे। महज 27 साल की उम्र में वो कोलकाता कॉर्पोरेशन के चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर बने और उसके बाद उन्होंने मेयर की जिम्मेदारी भी संभाली। एक प्रशासक के रूप में भी उन्होंने कई बड़े काम किए। बच्चों के लिए स्कूल, गरीब बच्चों के लिए दूध का इंतजाम और स्वच्छता से जुड़े उनके प्रयासों को आज भी याद किया जाता है।

उन्होंने कहा कि मैं नेताजी सुभाष चंद्र बोस को नमन करता हूं। देशभर के युवाओं से मेरा आग्रह है कि वे उनके बारे में अधिक से अधिक पढ़ें और उनके जीवन से निरंतर प्रेरणा लें। ■

प्रधानमंत्री ने जम्मू-कश्मीर में सोनमर्ग सुरंग का किया उद्घाटन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 13 जनवरी को जम्मू-कश्मीर में सोनमर्ग सुरंग का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने उन श्रमिकों का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने जम्मू-कश्मीर और भारत के विकास के लिए कड़ी मेहनत की है और अपनी जान भी दांव पर लगाई है। श्री मोदी ने कहा, "चुनौतियों के बावजूद हमारा संकल्प डगमगाया नहीं।" उन्होंने मजदूरों के दृढ़ संकल्प और प्रतिबद्धता तथा काम पूरा करने के लिए सभी बाधाओं को पार करने के लिए उनकी सराहना की। श्री मोदी ने 7 श्रमिकों की मौत पर भी शोक व्यक्त किया।

लगभग 12 किलोमीटर लंबी सोनमर्ग सुरंग परियोजना का निर्माण 2,700 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से किया गया है। इसमें 6.4 किलोमीटर लंबी सोनमर्ग मुख्य सुरंग, एक निकास सुरंग और एप्रोच रोड शामिल हैं। समुद्र तल से 8,650 फीट से अधिक की ऊंचाई पर स्थित यह परियोजना लेह के रास्ते में श्रीनगर और सोनमर्ग के बीच हर मौसम में कनेक्टिविटी को बेहतर करेगी, भूस्खलन और हिमस्खलन मार्गों को दरकिनार करेगी तथा रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण लद्दाख क्षेत्र में सुरक्षित और निर्बाध पहुंच सुनिश्चित करेगी। यह सोनमर्ग को साल भर के गंतव्य में बदलकर पर्यटन को भी बढ़ावा देगी, जिससे शीतकालीन पर्यटन, एडवेंचर स्पोर्ट्स और स्थानीय आजीविका को बढ़ावा मिलेगा। ■

'भारत-सिंगापुर द्विपक्षीय संबंधों में उल्लेखनीय प्रगति'

भाजपा को जानें' पहल के तहत भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा रसायन एवं उर्वरक मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 16 जनवरी, 2025 को नई दिल्ली में सिंगापुर गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री थर्मन शनमुगरत्नम से मुलाकात की।

इस बैठक के दौरान श्री नड्डा ने भाजपा के संगठनात्मक ढांचे और गतिविधियों की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने हाल ही में सिंगापुर की पीपुल्स एक्शन पार्टी (पीएपी) के 16 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल की भारत यात्रा पर भी प्रकाश डाला, जो कि 'भाजपा को जानें' पहल के तहत भारत आया था। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह आदान-प्रदान एक मूल्यवान अनुभव प्रदान करता है। उन्होंने मोदी सरकार की विभिन्न

स्वास्थ्य सेवा पहलों, खासकर समाज के कमजोर वर्गों, बच्चों एवं महिलाओं के लिए जारी योजनाओं के बारे में विस्तार से चर्चा की।

दोनों नेताओं ने पिछले दशक में भारत-सिंगापुर द्विपक्षीय संबंधों में हुई महत्वपूर्ण प्रगति पर विचार किया और आगे सहयोग के लिए संभावनाओं पर बात की। इस बातचीत के दौरान विशेष रूप से स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में सहयोग पर चर्चा हुई। इस बैठक के दौरान श्री नड्डा के साथ भाजपा विदेश मामलों के विभाग के प्रभारी डॉ. विजय चौथाईवाले भी उपस्थित रहे।

महामहिम श्री थर्मन शनमुगरत्नम की भारत की राजकीय यात्रा भारत और सिंगापुर के बीच राजनयिक संबंधों की 60वीं वर्षगांठ समारोह की शुरुआत का भी प्रतीक है। ■

कमल संदेश के आजीवन सदस्य बनें

आज ही लीजिए कमल संदेश की सदस्यता और दीजिए राष्ट्रीय विचार के संवर्धन में अपना योगदान!

सदस्यता प्रपत्र

नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन : .....

दूरभाष : ..... मोबाइल : (1)..... (2).....

ईमेल : .....

सदस्यता						
	एक वर्ष	₹350/-	☐	आजीवन सदस्यता (हिन्दी/अंग्रेजी)	₹3000/-	☐
	तीन वर्ष	₹1000/-	☐	आजीवन सदस्यता (हिन्दी+अंग्रेजी)	₹5000/-	☐

(भुगतान विवरण)

चेक/ड्राफ्ट क्र. :..... दिनांक :..... बैंक : .....

नोट : डीडी / चेक '**कमल संदेश**' के नाम देय होगा।
मनी आर्डर और नकद पूरे विवरण के साथ स्वीकार किए जाएंगे।

(हस्ताक्षर)

कमल संदेश

अपना डीडी/चेक निम्न पते पर भेजें

डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पीपी-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003

फोन: 011-23381428 फैक्स: 011-23387887 ईमेल: kamalsandesh@yahoo.co.in

कमल संदेश: राष्ट्रीय विचार की प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका

नई दिल्ली में 23 जनवरी, 2025 को संविधान सदन के सेंट्रल हॉल में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के अवसर पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

नई दिल्ली में 23 जनवरी, 2025 को संविधान सदन के सेंट्रल हॉल में नेताजी सुभाष चंद्र की जयंती के अवसर पर छात्रों से बातचीत करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

18 जनवरी, 2025 को 50,000 से अधिक गांवों के संपत्ति मालिकों को 'स्वामित्व योजना' के तहत 65 लाख से अधिक संपत्ति कार्ड वितरित करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

मुंबई में 15 जनवरी, 2025 को भारतीय नौसेना के नये युद्धपोत– सूरत, नीलगिरी एवं वाघशीर के जलावतरण समारोह के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह एवं अन्य गणमान्य जन

नई दिल्ली में 16 जनवरी, 2025 को सिंगापुर गणराज्य के राष्ट्रपति श्री थर्मन शनमुगरत्नम से मुलाकात करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

भारत मंडपम (नई दिल्ली) में 14 जनवरी, 2025 को भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के 150वें स्थापना दिवस समारोह में भाग लेते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

कमल संदेश
अब इंटरनेट पर भी उपलब्ध
लॉग इन करें:
www.kamalsandesh.org
राष्ट्रीय विचार की प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका

@Kamal.Sandesh
@KamalSandesh
kamal.sandesh
KamalSandeshLive

प्रेषण तिथि: (i) 1-2 चालू माह (ii) 16-17 चालू माह
डाकघर: लोदी रोड एचओ., नई दिल्ली "रजिस्टर्ड"
36 पृष्ठ कवर सहित
प्रकाशन तिथि: 05 फरवरी, 2025
आर.एन.आई. DELHIN/2006/16953
डी.एल. (एस)-17/3264/2025-27
Licence to Post without Prepayment
Licence No. U(S)-41/2021-23

26 जनवरी, 2025 को नई दिल्ली में कर्तव्य पथ पर

76वें गणतंत्र दिवस परेड की झलकियां

छायाकार: अजय कुमार सिंह